OCHORUS ORIGINALS

2

जड़ें जमाए

यीशु के पीछे चलना: चरनी से खाली
कब्र तक यीशु के साथ चलते हुए



Ochorus

जड़ें जमाए — युवाओं के लिये परमेश्वर के साथ 30 दिन — पुस्तक 2

यीशु के पीछे चलना: चरनी से खाली कब्र तक यीशु के साथ चलते हुए

Ochorus Originals

पहली बार 2026 में प्रकाशित।

OCHORUS

Ochorus के बारे में

मसीही विश्वास की महान क्लासिक कृतियों को दुनिया भर के चर्च के लिए मुफ़्त उपलब्ध कराना — उनकी अपनी भाषा में, परमेश्वर की महिमा के लिए।

Ochorus एक मसीही सेवकाई है, जिसके केंद्र विक्टोरिया (कनाडा) और कम्पाला (युगांडा) में हैं। 2021 से हम अतीत की महान मसीही पुस्तकें खोजते हैं, आज के पाठकों के लिए उनका सावधानी से संपादन करते हैं, और उन्हें मुफ़्त देते हैं — पढ़ने के लिए भी मुफ़्त और रखने के लिए भी मुफ़्त।

हम केवल एक वेबसाइट नहीं हैं। युगांडा में छपी पुस्तकें पूरे पूर्वी अफ़्रीका में सीधे लोगों के हाथों में पहुँचाई जाती हैं — पास्टरों के सम्मेलनों में, और उन कलीसियाओं, विद्यालयों और जेलों में जहाँ हमें सेवा के लिए बुलाया जाता है।

ochorus.com पर पढ़ना जारी रखें

- सैकड़ों क्लासिक पुस्तकें, उपदेश और जीवनियाँ — निःशुल्क, बिना विज्ञापन और बिना खाते के।
- अनेक भाषाओं में पुस्तकें — अंग्रेज़ी और स्वाहिली से लेकर अरबी और हिंदी तक।
- पढ़ने की योजनाएँ, हाइलाइट और नोट्स जो एक डिवाइस से दूसरे डिवाइस तक आपके साथ चलते हैं।
- ऊँची आवाज़ में सुनें, या किसी पुस्तक को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेज लें।
- इस जैसी निःशुल्क डाउनलोड। इन्हें खुलकर बाँटें।

"तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।"

मत्ती 10:8

विषय-सूची

इस पुस्तक के बारे में — 6

परिचय: आओ और यीशु से मिलो — 7

दिन 1 — वचन देहधारी हुआ — 10

दिन 2 — कोई जगह नहीं — 12

दिन 3 — चरवाहों के लिये शुभ समाचार — 14

दिन 4 — ज्योतिषियों की आराधना — 16

दिन 5 — बारह वर्ष की आयु में यीशु — 18

दिन 6 — यीशु के समान बढ़ना — 20

दिन 7 — "यह मेरा प्रिय पुत्र है" — 22

दिन 8 — परीक्षा हुई पर कभी पाप नहीं किया — 24

दिन 9 — मेरे पीछे चले आओ — 26

दिन 10 — पानी से दाखरस — 28

दिन 11 — रात में नीकुदेमुस — 30

दिन 12 — जीवन का जल — 32

दिन 13 — हवा भी आज्ञा मानती है — 34

दिन 14 — एक लड़के का भोजन — 36

दिन 15 — पानी पर चलना 38
दिन 16 — “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?” 40
दिन 17 — बालकों को आने दो 42
दिन 18 — लाजर, निकल आ! 44
दिन 19 — उलटी-पुलटी खुशी 46
दिन 20 — नमक और ज्योति 48
दिन 21 — पक्षियों को देखो 50
दिन 22 — खोई हुई भेड़ 52
दिन 23 — भाग गया बेटा 54
दिन 24 — भला सामरी 56
दिन 25 — जक्कई पेड़ पर चढ़ता है 58
दिन 26 — होशाना! 60
दिन 27 — पाँव धोना 62
दिन 28 — “पूरा हुआ” 64
दिन 29 — वह जी उठा है! 66
दिन 30 — जाओ और सुनाओ 68
उपसंहार: चलते रहो 70

इस पुस्तक के बारे में

Rooted is an original Ochorus devotional series for readers aged 9 to 12, and this is its second book. Book 1 planted the roots: who God is, the good news, and how to pray and grow. Book 2 turns to the one those roots grow into, and spends thirty days walking beside Jesus through His life on earth, drawing on all four Gospels.

The five weeks follow His story in order. Jesus arrives: the manger, the shepherds, the wise men, and the twelve-year-old in His Father's house. Jesus begins: His baptism, His temptation in the wilderness, and the fishermen He called to follow Him. Jesus' power: a storm stilled, a boy's lunch that fed thousands, a blind beggar healed and Lazarus called out of the tomb. Jesus' teaching: the Beatitudes, salt and light, the lost sheep, the runaway son and the good Samaritan. And Jesus wins: Zacchaeus, the donkey and the palm branches, the towel and basin, the cross and the empty tomb, ending with the Great Commission.

Every day follows the same short pattern: a passage from the Berean Standard Bible, a teaching that tells the story and asks what it shows about Jesus, a question to think about, one thing to try that day, and a prayer. It can be read alone or aloud together, and it works whether or not a reader has started with Book 1.

परिचय: आओ और यीशु से मिलो

कल्पना करो कि तुम पूरा एक महीना उस व्यक्ति के साथ-साथ चल सको जो अब तक जिए सब लोगों में सबसे महत्वपूर्ण है। तुम उन्हें कहानियाँ सुनाते हुए सुनोगे। तुम देखोगे कि वे केवल थोड़े से शब्दों से तूफ़ान को शान्त कर देते हैं। तुम देखोगे कि जब बड़े लोग बच्चों को भगाने की कोशिश करते हैं, तब वे उन्हें अपने पास बुलाते हैं। तुम उनके क्रूस के नीचे खड़े रहोगे, और तीन दिन बाद तुम उनकी खाली कब्र की ओर दौड़ोगे।

यह पुस्तक इसी के विषय में है। अगले 30 दिनों तक तुम **यीशु** के साथ चलोगे।

मसीही विश्वास में हर बात के केन्द्र में यीशु ही हैं। वे केवल एक अच्छे शिक्षक या बहुत पहले के किसी नायक भर नहीं हैं। बाइबल कहती है कि वे परमेश्वर के अपने पुत्र हैं, जो एक शिशु के रूप में पृथ्वी पर आए, एक सिद्ध जीवन जीया, हमारे पापों के लिये मरे और फिर जी उठे। वे आज जीवित हैं। और उन्हें जानने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उनके जीवन को उसी तरह ध्यान से देखा जाए जैसे उनके पहले मित्रों ने उसे देखा था।

यूहन्ना, उन्हीं मित्रों में से एक थे, जिन्होंने लिख रखा कि उन्होंने यीशु के विषय में अपनी पुस्तक क्यों लिखी:

> *"परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह, परमेश्वर के पुत्र हैं, और विश्वास करके उनके नाम से जीवन पाओ।"*
> *— यूहन्ना 20:31 (BSB)*

यही हमारा लक्ष्य भी है। केवल यीशु के *विषय में* जानना नहीं, बल्कि उन्हें जानना, उन पर भरोसा करना और उनके पीछे चलना।

इस पुस्तक में क्या है

यह 'जड़ें जमाए' की **पुस्तक** 2 है। (यदि तुमने पुस्तक 1 नहीं पढ़ी, तो कोई बात नहीं! तुम यहीं से आरम्भ कर सकते हो।) अगले 30 दिनों में तुम यीशु के पूरे जीवन के पीछे चलोगे:

- **सप्ताह 1 — यीशु का आगमन।** एक चरनी, चरवाहे, ज्योतिषी, और बारह वर्ष की आयु में यीशु।
- **सप्ताह 2 — यीशु का आरम्भ।** उनका बपतिस्मा, उनकी परीक्षा, और वे पहले लोग जिन्हें उन्होंने अपने पीछे आने के लिये बुलाया।
- **सप्ताह 3 — यीशु का सामर्थ्य।** तूफ़ान, एक बालक का भोजन, एक अंधा व्यक्ति और एक मरा हुआ व्यक्ति जो अपनी कब्र में से चलकर बाहर निकला।
- **सप्ताह 4 — यीशु की शिक्षा।** अब तक कहे गए सबसे प्रसिद्ध वचनों और कहानियों में से कुछ।
- **सप्ताह 5 — यीशु की जय।** उनके जीवन का अन्तिम सप्ताह, क्रूस और खाली कब्र।

हर दिन कैसे चलता है

हर दिन लगभग पाँच से दस मिनट लेता है और उसके पाँच भाग हैं:

1. **वचन।** चारों सुसमाचारों में से एक अंश: मत्ती, मरकुस, लूका या यूहन्ना। उसे धीरे-धीरे पढ़ो।
2. **शिक्षा।** वचन के पीछे की कहानी, और वह तुम्हें यीशु के विषय में क्या दिखाती है।
3. **इस पर सोचो।** गहराई से सोचने में मदद करने वाला एक प्रश्न, अकेले या किसी और के साथ।
4. **यह करके देखो।** उस दिन यीशु के पीछे चलने का एक छोटा-सा तरीका।
5. **प्रार्थना।** प्रार्थना करने के लिये एक प्रार्थना। अपने शब्द भी जोड़ो!

इस यात्रा के लिये सुझाव

- **पूरी कहानी पढ़ो।** हर दिन का वचन एक बड़ी कहानी में से आता है। यदि तुम्हारे पास समय हो, तो उसे अपनी बाइबल में खोजो और आस-पास की आयतें पढ़ो।
- **उसकी कल्पना करो।** कल्पना करने की कोशिश करो कि तुम वहीं हो। तुम क्या देखते, सुनते और सूँघते हो? लोग कैसा महसूस करते हैं?
- **पूछो, "यीशु कैसे हैं?"** हर कहानी तुम्हें उनके विषय में कुछ दिखाती है। उसे ढूँढ़ो।
- **कोई दिन छूट गया? चलते रहो।** यीशु तुम्हें अंक नहीं दे रहे। बस जहाँ छोड़ा था वहीं से आगे बढ़ो।

चेलों ने यीशु के विषय में हर बात तुरन्त नहीं समझ ली थी। उनके साथ चलते-चलते समय लगा। तुम्हारे लिये भी यही सच है। तो साथ चलो। आओ, यीशु से मिलने चलें।

माता-पिता, दादा-दादी और अगुवों के लिये

जड़ें जमाए की पुस्तक 2, 9 से 12 वर्ष की आयु के पाठकों को लगभग कालक्रम के अनुसार मसीह के जीवन में से होकर ले चलती है, चारों सुसमाचारों में से लेते हुए, और हर पवित्रशास्त्र बेरियन स्टैंडर्ड बाइबल में से उद्धृत है। यह अकेले पढ़ने या साथ मिलकर ऊँचे स्वर में पढ़ने, दोनों के लिये अच्छी है। अपने पाठक को उत्साहित करो कि वह आस-पास का अंश अपनी बाइबल में खोजे। इनमें से कई कहानियाँ पूरी पढ़ना ही सबसे अच्छा है। सप्ताह 5, यीशु के पकड़वाए जाने, क्रूस पर चढ़ाए जाने और जी उठने को इस तरह बताता है जो सच्चा है फिर भी छोटे पाठकों के योग्य है।

दिन 1 — वचन देहधारी हुआ

"आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"
— यूहन्ना 1:1 (BSB)
"वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया; और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा।"
— यूहन्ना 1:14 (BSB)

यीशु की कहानी कहाँ से आरम्भ होती है? तुम कह सकते हो, "बैतलहम में, जब उनका जन्म हुआ।" मत्ती और लूका अपनी पुस्तकें वहीं से आरम्भ करते हैं। परन्तु यूहन्ना कहीं बहुत पहले से आरम्भ करते हैं। वे हर चीज़ के बिलकुल आरम्भ से शुरू करते हैं।

"आदि में वचन था।" क्या ये पहले शब्द जाने-पहचाने लगते हैं? ये वही शब्द हैं जिनसे उत्पत्ति 1:1 में पूरी बाइबल आरम्भ होती है: "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" यूहन्ना हमें बता रहे हैं कि जगत के बनने से पहले, पहले तारे या पहले महासागर से पहले, **वचन** पहले से ही वहाँ था।

वचन कौन है? पढ़ते रहो और तुम्हें पता चल जाएगा: "वचन देहधारी हुआ।" वचन यीशु ही हैं।

उन्हें "वचन" क्यों कहा जाए? सोचो कि शब्द क्या करते हैं। जब तुम चाहते हो कि कोई जाने कि तुम क्या सोच रहे हो, तो तुम शब्दों का उपयोग करते हो। शब्द दिखाते हैं कि तुम्हारे भीतर क्या है। यीशु परमेश्वर के वचन हैं, क्योंकि वे हमें ठीक-ठीक दिखाते हैं कि परमेश्वर कैसे हैं। यदि तुम जानना चाहते हो कि परमेश्वर कैसे हैं, तो यीशु को देखो।

यूहन्ना वचन के विषय में तीन अद्भुत बातें कहते हैं। वह "परमेश्वर के साथ था," इसलिये वह सदा से पिता के निकट रहा है। वह "परमेश्वर था," इसलिये वह केवल कोई सन्देशवाहक या स्वर्गदूत नहीं है। वह स्वयं परमेश्वर है। और वह "देहधारी हुआ।" जिस परमेश्वर ने सब

कुछ बनाया, वह एक सच्चा मनुष्य बन गया, हाड़-माँस वाला, जो भूखा और थका, जो हँसा और रोया।

यूहन्ना कहते हैं कि उन्होंने "हमारे बीच में डेरा किया।" यूहन्ना ने जो शब्द इस्तेमाल किया उसका अर्थ है कि उन्होंने हमारे साथ अपना तम्बू खड़ा किया। वे हमारे मुहल्ले में आकर बस गए!

और यूहन्ना ने इसे अपनी आँखों से देखा था: "हमने उसकी महिमा देखी।" यीशु "अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण" थे। अनुग्रह का अर्थ है कि वे बिना योग्यता के दी जाने वाली कृपा से भरपूर थे। सच्चाई का अर्थ है कि उन्होंने जो कुछ कहा और किया, वह सब सच्चा और सही था।

इन्हीं के पीछे हम इस महीने चलेंगे। केवल इतिहास का कोई पुरुष नहीं, बल्कि परमेश्वर, जो निकट आया।

इस पर सोचो: यह इतना अद्भुत क्यों है कि जिस परमेश्वर ने सब कुछ बनाया, वह एक मनुष्य बन जाए?

यह करके देखो: अपनी बाइबल में यूहन्ना 1:1–14 पढ़ो। जब भी तुम "वचन" देखो, उसके बदले "यीशु" कहो।

हे प्रिय यीशु, तू आदि में था, और तू परमेश्वर है। मनुष्य बनकर हमारे बीच रहने के लिये तेरा धन्यवाद। मुझे तुझे देखकर यह देखने में मदद कर कि परमेश्वर कैसे हैं। इन 30 दिनों में मुझे तुझे और अच्छी तरह जानने में मदद कर। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 2 — कोई जगह नहीं

"और जब वे वहाँ थे, तो उसके जनने के दिन पूरे हुए, और वह अपने पहलौठे पुत्र को जनी, और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा, क्योंकि उनके लिये सराय में कोई जगह न थी।"

— लूका 2:6–7 (BSB)

यदि आज किसी राजा का जन्म होने वाला हो, तो वह कहाँ होगा? शायद देश के सबसे बढ़िया अस्पताल में, जहाँ डॉक्टर और नर्सें इधर-उधर दौड़ रही हों, बाहर पत्रकार प्रतीक्षा कर रहे हों, और महल में एक सुनहरा पलना तैयार हो।

परन्तु जब राजाओं के राजा का जन्म हुआ, तो वह बिलकुल इस तरह नहीं हुआ।

मरियम और यूसुफ नासरत नाम के एक नगर में रहते थे। परन्तु रोमी सम्राट ने आज्ञा दी कि हर कोई गिने जाने के लिये अपने परिवार के मूल नगर में जाए। यूसुफ का परिवार बैतलहम से था, इसलिये उन्हें वहाँ यात्रा करनी पड़ी, लगभग 90 मील, अधिकतर पैदल, जबकि मरियम के बच्चा होने का समय निकट था।

जब वे पहुँचे, तो नगर खचाखच भरा था। हर जगह भरी हुई थी। "उनके लिये सराय में कोई जगह न थी।" इसलिये परमेश्वर के पुत्र यीशु का जन्म ऐसी जगह हुआ जहाँ पशु रखे जाते थे। मरियम ने उन्हें कपड़े की पट्टियों में लपेटा और एक **चरनी** में लिटा दिया, जो पशुओं के खाने की नाँद होती है।

इस पर सोचो। जिसने तारों को बनाया, वह खाने की नाँद में सोया। जिसका पूरा जगत है, उसके पास अपनी कोई जगह न थी।

परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? क्योंकि यीशु महलों में बड़े लोगों से सेवा करवाने नहीं आए। वे सब के लिये आए, जिनमें गरीब, साधारण और अनदेखे लोग भी शामिल हैं। अपनी पहली ही रात से यीशु ने दिखा दिया कि कोई भी उनकी पहुँच के लिये बहुत तुच्छ नहीं है।

यह हमें यह भी दिखाता है कि यीशु कितने नम्र हैं। बाइबल कहती है कि यद्यपि वे धनी थे, फिर भी हमारे लिये कंगाल बन गए (2 कुरिन्थियों 8:9)। उन्होंने स्वर्ग की महिमा को छोड़ दिया ताकि एक अस्तबल में जन्म लें।

इस कहानी में हमारे लिये भी एक प्रश्न है। बैतलहम में यीशु के लिये कोई जगह न थी। क्या तुम्हारे जीवन में उनके लिये जगह है? कभी-कभी हमारे दिन स्कूल, खेल, स्क्रीन और गतिविधियों से इतने भर जाते हैं कि हम यीशु को बाहर धकेल देते हैं। परन्तु वे खटखटा रहे हैं, और वे भीतर आना चाहते हैं।

इस पर सोचो: अभी तुम्हारे जीवन से यीशु को कौन-सी बात बाहर धकेल रही हो सकती है?

यह करके देखो: आज यीशु के लिये जगह बनाओ। कोई एक चीज़ चुनो जिस पर तुम सामान्यतः समय बिताते हो, और उसके बदले वह समय उनसे बात करने या उनके विषय में पढ़ने में बिताओ।

हे प्रिय यीशु, तू सब कुछ का राजा है, फिर भी तुझे एक चरनी में लिटाया गया जहाँ पशु खाते थे। इतना नम्र होने और मुझ जैसे साधारण लोगों के पास आने के लिये तेरा धन्यवाद। कृपया हर दिन मेरे जीवन में तेरे लिये जगह बनाने में मेरी मदद कर। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 3 — चरवाहों के लिये शुभ समाचार

"परन्तु स्वर्गदूत ने उनसे कहा, 'मत डरो! क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का शुभ समाचार सुनाता हूँ, जो सब लोगों के लिये होगा: आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता उत्पन्न हुआ है। वही मसीह प्रभु है!'"
— लूका 2:10–11 (BSB)

जिस रात यीशु का जन्म हुआ, चरवाहों का एक दल बैतलहम के पास खेतों में अपनी भेड़ों की रखवाली कर रहा था। अँधेरा और सन्नाटा था। शायद वे आग के चारों ओर कहानियाँ सुना रहे थे, या जागते रहने की कोशिश कर रहे थे।

अचानक एक स्वर्गदूत प्रकट हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका। चरवाहे बहुत डर गए! परन्तु स्वर्गदूत ने कहा, "मत डरो! क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का शुभ समाचार सुनाता हूँ।"

फिर आकाश स्वर्गदूतों की एक विशाल भीड़ से भर गया, जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे: "सर्वोच्च स्थानों में परमेश्वर की महिमा हो!"

यहाँ एक हैरान करने वाली बात है। यदि तुम परमेश्वर होते और अपने पुत्र के जन्म की घोषणा करना चाहते, तो सबसे पहले किसे बताते? राजाओं को? याजकों को? धनी और प्रसिद्ध लोगों को? परमेश्वर ने **चरवाहों** को चुना।

उन दिनों चरवाहे बड़े लोग नहीं माने जाते थे। वे गरीब थे। उनमें भेड़ों जैसी गंध आती थी। वे खुले में रहते थे और लम्बी, अकेली रातों में काम करते थे। कुछ लोग उन्हें तुच्छ समझते थे। परन्तु परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों को सबसे पहले उन्हीं के पास भेजा।

यह हमें एक महत्वपूर्ण बात बताता है: यीशु के विषय में शुभ समाचार "सब लोगों के लिये" है। केवल लोकप्रिय बच्चों, होशियार बच्चों या सबसे अच्छे कपड़ों वाले बच्चों के लिये नहीं। सब के लिये।

देखो कि स्वर्गदूत ने यीशु को क्या कहा:

- **एक उद्धारकर्ता।** कोई जो बचाता है। यीशु हमें हमारे पापों से बचाने आए।
- **मसीह।** इसका अर्थ है अभिषिक्त जन, वह राजा जिसकी परमेश्वर ने सैकड़ों वर्षों से प्रतिज्ञा की थी।
- **प्रभु।** वह जो हर चीज़ पर अधिकार रखता है।

चरवाहों ने क्या किया? उन्होंने केवल यह कहकर, "वाह, कितना अच्छा," फिर से सोने नहीं चले गए। वे झटपट बैतलहम को गए और उस बालक को पाया, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत ने कहा था। फिर उन्होंने सब को बताया कि उन्होंने क्या देखा है, और परमेश्वर की स्तुति करते हुए अपने खेतों को लौट गए।

यीशु से मिलने पर यही होता है। तुम इसे अपने तक नहीं रख सकते।

इस पर सोचो: तुम्हें क्या लगता है, परमेश्वर ने यीशु के जन्म की घोषणा राजाओं के बजाय सबसे पहले चरवाहों को क्यों की?

यह करके देखो: चरवाहों ने सब को यीशु के विषय में बताया। आज किसी एक व्यक्ति को यीशु के विषय में कोई एक बात बताओ जो तुम्हें बहुत प्यारी लगती है।

हे परमेश्वर, सब लोगों के लिये, और मेरे लिये भी, शुभ समाचार भेजने के लिये तेरा धन्यवाद। धन्यवाद कि यीशु मेरे उद्धारकर्ता, मसीह और प्रभु हैं। मुझे उन चरवाहों के समान बना, जो झटपट यीशु को ढूँढ़ने गए और फिर सब को उनके विषय में बताया। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 4 — ज्योतिषियों की आराधना

"जब उन्होंने उस तारे को देखा, तो वे आनन्द से अति मगन हुए। और घर में पहुँचकर उन्होंने उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और गिरकर उसे दण्डवत् किया। तब उन्होंने अपने खजाने खोलकर उसे सोना, लोबान और गन्धरस की भेंट चढ़ाई।"

— मत्ती 2:10–11 (BSB)

दूर पूर्व में, कुछ बहुत बुद्धिमान और विद्वान पुरुषों ने, जिन्हें **ज्योतिषी** कहा जाता था, आकाश में एक विशेष तारा देखा। उन्होंने विश्वास किया कि इसका अर्थ है कि एक महान राजा का जन्म हुआ है। इसलिये उन्होंने अपना सामान बाँधा और एक लम्बी यात्रा आरम्भ की, शायद सैकड़ों मील की, ताकि उन्हें ढूँढ़ें।

जब वे यरूशलेम पहुँचे, तो उन्होंने पूछा, "वह कहाँ है जो यहूदियों का राजा होने के लिये जन्मा है? हमने पूर्व में उसका तारा देखा और उसकी आराधना करने आए हैं।" दुष्ट राजा हेरोदेस ने यह सुना और बहुत घबरा गया। वह नहीं चाहता था कि कोई और राजा हो!

परन्तु ज्योतिषी ढूँढ़ते रहे। वह तारा उनके आगे-आगे चला और उस स्थान के ऊपर ठहर गया जहाँ यीशु थे। अब तक यीशु चरनी में पड़े कोई नवजात शिशु नहीं रहे थे। वे एक छोटे बालक थे जो मरियम और यूसुफ के साथ एक घर में रहते थे।

देखो कि ज्योतिषियों ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई: "वे आनन्द से अति मगन हुए।" वे इतनी दूर से आए थे, और आखिरकार उन्होंने उन्हें पा लिया! फिर इन बड़े, पढ़े-लिखे पुरुषों ने कुछ अद्भुत किया। उन्होंने "गिरकर उसे दण्डवत् किया।" वे एक छोटे बालक के सामने झुककर दण्डवत् हुए, क्योंकि वे जानते थे कि वही राजा है।

फिर उन्होंने उन्हें भेंट दीं: सोना, लोबान और गन्धरस। ये महँगी, बहुमूल्य भेंटें थीं। बहुत से मसीहियों ने इनमें एक विशेष अर्थ देखा है। सोना एक राजा के लिये भेंट है। लोबान परमेश्वर की आराधना में जलाया जाता था। गन्धरस का उपयोग तब होता था जब कोई मर

जाता था। मिलकर ये बताती हैं कि यीशु कौन हैं: राजा, स्वयं परमेश्वर, और वह उद्धारकर्ता जो हमारे लिये मरने वाला था।

ज्योतिषी हमें यीशु के पीछे चलने के विषय में तीन बातें सिखाते हैं:

उन्हें ढूँढ़ो। जब तक उन्होंने उन्हें पा न लिया, उन्होंने हार नहीं मानी।

उनकी आराधना करो। वे जानते थे कि वे आदर के योग्य हैं।

उन्हें अपना सबसे अच्छा दो। वे बचा-खुचा नहीं लाए। वे खजाना लाए।

शायद तुम्हारे पास यीशु को देने के लिये सोना न हो। परन्तु तुम उन्हें उससे भी अधिक बहुमूल्य कोई चीज़ दे सकते हो: अपना हृदय, अपना समय और अपना पूरा जीवन।

इस पर सोचो: सबसे अच्छी कौन-सी चीज़ है जो तुम यीशु को दे सकते हो?

यह करके देखो: कोई एक "खजाना" सोचो जो तुम आज यीशु को दे सकते हो: अपना समय, अपनी दयालुता, कोई गुण, या तुम्हारे पास कोई ऐसी चीज़ जो किसी और की मदद कर सके। फिर उसे दे दो।

हे प्रिय यीशु, तू राजा है, और तू मेरी आराधना के योग्य है। ज्योतिषियों के समान, जब तक मैं तुझे न पा लूँ, तुझे ढूँढ़ने में मेरी मदद कर। मुझे तुझे अपना सबसे अच्छा देने में मदद कर, अपना बचा-खुचा नहीं। आज मैं तुझे अपना हृदय देता हूँ। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 5 — बारह वर्ष की आयु में यीशु

"अन्त में, तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर में बैठे हुए पाया, जहाँ वह गुरुओं के बीच में बैठा उनकी सुन रहा था और उनसे प्रश्न पूछ रहा था। और जितनों ने उसकी सुनी, वे सब उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित थे... 'तुम मुझे क्यों ढूँढ़ते थे?' उसने पूछा। 'क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना अवश्य है?'"

— लूका 2:46–47, 49 (BSB)

बाइबल हमें यीशु के बचपन के विषय में अधिक नहीं बताती। परन्तु वह हमें एक कहानी अवश्य बताती है, जब वे **बारह वर्ष के** थे। शायद अभी तुम्हारी उम्र भी लगभग इतनी ही हो!

हर वर्ष, यीशु का परिवार फसह नाम के एक बड़े पर्व के लिये यरूशलेम जाता था। लोग परिवार और मित्रों के बड़े-बड़े दलों में यात्रा करते थे, कई दिनों तक साथ-साथ चलते हुए। जब पर्व समाप्त हुआ, तो मरियम और यूसुफ घर की ओर चल पड़े। उन्होंने सोचा कि यीशु भीड़ में कहीं रिश्तेदारों या मित्रों के साथ होंगे।

परन्तु पूरे एक दिन चलने के बाद, वे उन्हें कहीं भी न पा सके! क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि वे कितने डर गए होंगे? वे झटपट यरूशलेम लौटे और तीन दिन तक ढूँढ़ते रहे।

आखिरकार उन्होंने उन्हें मन्दिर में, परमेश्वर के भवन में पाया। यीशु परमेश्वर की व्यवस्था के गुरुओं के साथ बैठे थे। वे उनकी सुन रहे थे और उनसे प्रश्न पूछ रहे थे। और सब लोग इस बात से चकित थे कि वे कितना समझते हैं।

मरियम ने कहा, "हे पुत्र, तूने हमारे साथ ऐसा क्यों किया? तेरा पिता और मैं व्याकुल होकर तुझे ढूँढ़ते रहे।" और यीशु ने उत्तर दिया, "क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में होना अवश्य है?"

यीशु पहले से ही एक बहुत महत्वपूर्ण बात जानते थे: परमेश्वर उनके पिता थे, और उन्हें उनके निकट रहना बहुत भाता था। बारह वर्ष की आयु में भी, यीशु परमेश्वर के वचन को

सुनना, उसके विषय में प्रश्न पूछना और उसे समझना चाहते थे।

फिर बाइबल हमें बताती है कि यीशु अपने माता-पिता के साथ घर गए और उनकी **आज्ञा मानी**। यद्यपि वे परमेश्वर के पुत्र थे, फिर भी उन्होंने मरियम और यूसुफ का आदर किया।

इस कहानी का तुम्हारे लिये यह अर्थ है। तुम परमेश्वर से प्रेम करने और उन्हें जानने की इच्छा रखने के लिये बहुत छोटे नहीं हो। तुम बाइबल के विषय में बड़े प्रश्न पूछने के लिये भी बहुत छोटे नहीं हो। यीशु ने भी प्रश्न पूछे! और परमेश्वर से प्रेम करना तुम्हारे माता-पिता की आज्ञा मानने के साथ-साथ चलता है, उसके विरुद्ध नहीं।

इस पर सोचो: परमेश्वर या बाइबल के विषय में तुम्हारा कोई प्रश्न क्या है? तुम उसे किससे पूछ सकते हो?

यह करके देखो: परमेश्वर या बाइबल के विषय में एक प्रश्न लिख लो। इस सप्ताह उसे अपने माता-पिता, किसी पासबान या कलीसिया के किसी शिक्षक से पूछो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि यीशु भी कभी मुझ जैसे बालक थे। जैसे वे तेरे निकट रहना चाहते थे, वैसे ही मुझे भी तेरे निकट रहना भाने में मदद कर। मुझे तेरे विषय में सीखने और अच्छे प्रश्न पूछने की भूख दे। और मुझे अपने माता-पिता का आदर करने और उनकी आज्ञा मानने में भी मदद कर। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 6 — यीशु के समान बढ़ना

"और यीशु ज्ञान और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।"

— लूका 2:52 (BSB)

क्या तुम्हारे घर में कोई ऐसी जगह है जहाँ कोई किसी दीवार या दरवाज़े की चौखट पर तुम्हारी ऊँचाई का निशान लगाता है? कभी-कभी तुम उसके सहारे खड़े होते हो, कोई एक रेखा खींचता है, और तुम देख सकते हो कि तुम कितने बढ़ गए हो।

मन्दिर में यीशु की कहानी के बाद, बाइबल लगभग अठारह वर्ष आगे बढ़ जाती है। हम अधिक नहीं जानते कि क्या हुआ। परन्तु लूका हमें एक आयत देते हैं जो सब कुछ समेट देती है: "यीशु ज्ञान और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।"

यीशु पृथ्वी पर कोई बड़ा व्यक्ति बनकर नहीं आए। वे बड़े हुए, ठीक तुम्हारी तरह। उन्होंने चलना और बोलना सीखा। उन्होंने काम करना सीखा, शायद यूसुफ की बढ़ईगीरी की दुकान में। उन्हें बढ़ना पड़ा।

लूका **चार तरीके** बताते हैं जिनमें यीशु बढ़े। ये चार तरीके हैं जिनमें परमेश्वर चाहता है कि तुम भी बढ़ो।

ज्ञान: तुम्हारा मन। यीशु समझ में बढ़े। उन्होंने परमेश्वर का वचन सीखा और अच्छे निर्णय लेना सीखा। तुम ज्ञान में तब बढ़ते हो जब तुम स्कूल में सीखते हो, अपनी बाइबल पढ़ते हो और बुद्धिमान लोगों की सुनते हो।

डील-डौल: तुम्हारा शरीर। यीशु लम्बे और बलवन्त होते गए। तुम्हारा शरीर भी परमेश्वर की ओर से एक भेंट है। अच्छे भोजन, व्यायाम और नींद से उसकी देखभाल करना उनका आदर करता है।

परमेश्वर का अनुग्रह: तुम्हारी आत्मा। यीशु का अपने पिता के साथ सम्बन्ध बढ़ता गया। तुम परमेश्वर के निकट तब आते हो जब तुम प्रार्थना करते हो, उनका वचन पढ़ते हो

और उनकी आज्ञा मानते हो।

मनुष्यों का अनुग्रह: तुम्हारे सम्बन्ध। लोग यीशु को पसन्द करते थे और उन पर भरोसा करते थे। तुम इस तरह तब बढ़ते हो जब तुम अपने परिवार, मित्रों और पड़ोसियों के प्रति दयालु, ईमानदार और सहायक होते हो।

कभी-कभी हम इनमें से केवल एक या दो की ही परवाह करते हैं। शायद तुम खेलों में बहुत मेहनत करते हो पर कभी अपनी बाइबल नहीं खोलते। या शायद तुम स्कूल में बहुत अच्छे हो पर अपने छोटे भाई के साथ निर्दयी। यीशु चारों तरीकों में बढ़े, और वे चाहते हैं कि तुम भी चारों में बढ़ो।

बढ़ने में समय लगता है। तुम एक दिन से दूसरे दिन तक अपने आप को लम्बा होते हुए नहीं देख सकते, पर एक वर्ष में परिवर्तन बहुत बड़ा होता है। भीतर भी यही सच है। बढ़ते रहो, हर दिन थोड़ा-थोड़ा।

इस पर सोचो: बढ़ने के चार तरीकों (ज्ञान, शरीर, परमेश्वर और लोग) में से, अभी तुम्हें किस पर सबसे अधिक मेहनत करने की ज़रूरत है?

यह करके देखो: अपनी कॉपी में चार खाने बनाओ, जिन पर लिखा हो ज्ञान, शरीर, परमेश्वर और लोग। हर एक में, एक बात लिखो जो तुम इस सप्ताह बढ़ने के लिये कर सकते हो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि यीशु भी ठीक मेरी तरह बड़े हुए। मुझे ज्ञान में, अपने शरीर में, तेरे साथ अपनी मित्रता में और दूसरों के साथ अपने सम्बन्धों में बढ़ने में मदद कर। मुझे हर दिन यीशु के और अधिक समान बना। उनके नाम से, आमीन।

दिन 7 — "यह मेरा प्रिय पुत्र है"

"जैसे ही यीशु ने बपतिस्मा लिया, वह पानी में से ऊपर आए। और देखो, आकाश उनके लिये खुल गया, और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर ठहरते हुए देखा। और स्वर्ग से यह आवाज़ आई, 'यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ!'"
— मत्ती 3:16–17

जब यीशु लगभग तीस वर्ष के थे, तब उनके काम को आरम्भ करने का समय आ गया। उनके सम्बन्धी, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, यरदन नदी के पास प्रचार कर रहे थे। वह लोगों से कहते थे कि अपने पापों से मन फिराओ और तैयार हो जाओ, क्योंकि राजा आ रहा है। भीड़ की भीड़ नदी में उससे बपतिस्मा लेने आती थी।

एक दिन, यीशु भी आए। यूहन्ना चकित रह गया! उसने कहा, "मुझे तो आपके हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और क्या आप मेरे पास आते हैं?" यूहन्ना जानता था कि यीशु ने कभी पाप नहीं किया। परन्तु यीशु ने कहा कि ऐसा करना उचित है। यीशु यह दिखा रहे थे कि वह उन लोगों के साथ एक हैं जिन्हें बचाने वे आए थे।

जैसे ही यीशु पानी में से ऊपर आए, एक ही समय में तीन अद्भुत बातें हुईं। आकाश खुल गया। पवित्र आत्मा कबूतर के समान उन पर उतरा। और पिता परमेश्वर की आवाज़ स्वर्ग से बोली: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ!"

क्या तुमने ध्यान दिया? इस एक ही क्षण में, हम **पिता** को बोलते हुए, **पुत्र** को बपतिस्मा लेते हुए और **पवित्र आत्मा** को उतरते हुए देखते हैं। एक ही परमेश्वर, तीन व्यक्तियों में, सब एक साथ।

अब उन शब्दों के बारे में सोचो जो पिता ने कहे। उसने वे शब्द कब कहे? *इससे पहले* कि यीशु ने एक भी उपदेश दिया हो, एक भी मनुष्य को चंगा किया हो या एक भी चमत्कार किया

हो। यीशु ने अभी तक अपना कोई भी प्रसिद्ध काम नहीं किया था। फिर भी पिता ने पहले ही कह दिया, "मैं तुझ से प्रेम करता हूँ। मैं तुझ से प्रसन्न हूँ।"

पिता का प्रेम पहले आया। यीशु को उसे कमाना नहीं पड़ा।

यह बात तुम्हारे लिये भी मायने रखती है। यदि तुमने यीशु पर भरोसा किया है, तो तुम परमेश्वर की सन्तान हो, और परमेश्वर तुमसे इसलिये प्रेम करता है क्योंकि तुम यीशु के हो, इसलिये नहीं कि तुम कितना अच्छा प्रदर्शन करते हो। तुम्हें अच्छे अंकों, खेल जीतने या परिपूर्ण होने से उसका प्रेम कमाना नहीं पड़ता। तुम उसके प्रेम *से* जीने पाते हो, उसके *लिये* नहीं।

यीशु ने अपने पिता से वे शब्द सुने, और तब वे वह सबसे कठिन काम करने निकल पड़े जो किसी ने कभी किया है। यह जानना कि तुमसे प्रेम किया जाता है, तुम्हें सामर्थ्य देता है।

इस पर सोचो: तुम्हारा जीवन कितना अलग होता यदि तुम विश्वास करते कि परमेश्वर तुमसे कुछ भी करने से पहले ही प्रेम करता है, इसलिये नहीं कि तुम क्या करते हो?

यह करके देखो: मत्ती 3:13–17 पढ़ो। फिर लिखो: "क्योंकि मैं यीशु का हूँ, परमेश्वर मुझ से प्रेम करता है। मुझे इसे कमाना नहीं पड़ता।"

हे प्रिय पिता, यीशु से प्रेम करने के लिये तेरा धन्यवाद, और इसके लिये भी धन्यवाद कि क्योंकि मैं उसका हूँ, तू मुझ से भी प्रेम करता है। मेरी सहायता कर कि मैं तेरा प्रेम कमाने की कोशिश करना छोड़ दूँ और उसमें से जीना आरम्भ करूँ। मुझे सामर्थ्य दे कि मैं आज तेरे पीछे चलूँ, यह जानते हुए कि मुझ से प्रेम किया जाता है। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 8 — परीक्षा हुई पर कभी पाप नहीं किया

"तब आत्मा यीशु को जंगल में ले गया, ताकि शैतान उसकी परीक्षा करे। चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, उसे भूख लगी। तब परखनेवाला उसके पास आया और बोला, 'यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों से कह कि वे रोटियाँ बन जाएँ।' पर यीशु ने उत्तर दिया, 'लिखा है: "मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित न रहेगा, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।"'"
— मत्ती 4:1–4

अपने बपतिस्मे के तुरन्त बाद, यीशु जंगल में चले गए—एक गरम, सूखी और सुनसान जगह। चालीस दिन तक उन्होंने कुछ भी नहीं खाया। सोचो, उन्हें कितनी भूख लगी होगी!

ठीक उसी समय शैतान वहाँ आ पहुँचा। शैतान हमेशा उसी घड़ी की ताक में रहता है जब हम सबसे कमज़ोर होते हैं: जब हम थके हुए, भूखे, अकेले या परेशान होते हैं।

शैतान ने यीशु की तीन बार परीक्षा की। पहले उसने कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों से कह कि वे रोटियाँ बन जाएँ।" यीशु यह आसानी से कर सकते थे। पर अपनी सामर्थ्य को केवल अपने लिए, अपने पिता की योजना के बाहर इस्तेमाल करना गलत होता।

फिर शैतान यीशु को मन्दिर के सबसे ऊँचे स्थान पर ले गया और उनसे कहा कि नीचे कूद जाएँ, ताकि स्वर्गदूत उन्हें थाम लें। आखिर में, उसने यीशु को संसार के सारे राज्य दिखाए और वादा किया कि वह ये सब उन्हें दे देगा, बस अगर यीशु झुककर उसकी आराधना करें।

हर बार यीशु ने मना किया। और देखो कि उन्होंने *कैसे* मना किया। हर एक बार उन्होंने बाइबल के वचनों से उत्तर दिया: "लिखा है..." यीशु ने शैतान के झूठ का सामना परमेश्वर की सच्चाई से किया। और आखिरकार, शैतान वहाँ से चला गया।

इस कहानी से याद रखने योग्य तीन बातें ये हैं।

परीक्षा में पड़ना पाप नहीं है। यीशु की परीक्षा हुई, फिर भी उन्होंने कभी पाप नहीं किया। झूठ बोलने, धोखा देने या निर्दयी होने की परीक्षा महसूस करना तुम्हें बुरा नहीं बना

देता। असल बात यह है कि इसके बाद तुम क्या करते हो।

परमेश्वर का वचन तुम्हारा हथियार है। यीशु ने न तो बहस की और न ही चतुराई दिखाने की कोशिश की। उन्होंने पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल किया। जब तुम परमेश्वर के वचन को जानते हो, तो तुम भी इसका इस्तेमाल कर सकते हो।

यीशु समझते हैं। बाइबल कहती है कि यीशु की भी हमारी ही तरह हर प्रकार से परीक्षा हुई, फिर भी उन्होंने पाप नहीं किया (इब्रानियों 4:15)। जब तुम्हारी परीक्षा हो, तो तुम मदद के लिए उनके पास जा सकते हो। वे ठीक-ठीक जानते हैं कि यह कैसा लगता है, और वे जीत गए।

और क्योंकि यीशु ने कभी पाप नहीं किया, इसलिए वे वह सिद्ध उद्धारकर्ता बन सके जिसने *हमारे* पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया।

इस पर सोचो: तुम्हें सबसे ज़्यादा परीक्षा कब महसूस होती है? क्या तुम थके हुए, ऊबे हुए, भूखे या परेशान होने पर ज़्यादा जल्दी हार मान लेते हो?

यह करके देखो: कोई एक ऐसी बात चुनो जिसे करने की परीक्षा तुम्हें अक्सर होती है। कोई ऐसा बाइबल वचन ढूँढ़ो जो उसका उत्तर देता हो (माता-पिता या पास्टर मदद कर सकते हैं), और उसे याद कर लो।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि आपकी भी मेरी ही तरह परीक्षा हुई, पर आपने कभी पाप नहीं किया। जब मेरी परीक्षा हो, तो मुझे आपके वचन को याद रखने और मना करने में मदद कीजिए। धन्यवाद कि आप समझते हैं, और यह कि मैं मदद के लिए हमेशा आपके पास आ सकता हूँ। आपके नाम में, आमीन।

दिन 9 — मेरे पीछे चले आओ

"जब यीशु गलील की झील के किनारे चल रहे थे, तब उन्होंने शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को देखा। वे झील में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वे मछुए थे। 'मेरे पीछे चले आओ,' यीशु ने कहा, 'और मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।' और वे तुरन्त अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।"
— मरकुस 1:16–18

शमौन और उसका भाई अन्द्रियास साधारण मछुए थे। वे सवेरे जल्दी उठते, गलील की झील में अपने जाल डालते और बेचने के लिये मछलियाँ पकड़ लाते थे। यह कठिन और बदबूदार काम था। वे शायद यही सोचते थे कि जीवन भर यही करते रहेंगे, ठीक वैसे ही जैसे उनके पिता करते आए थे।

फिर एक दिन यीशु किनारे-किनारे चलते हुए आए और उन्होंने बस कुछ शब्द कहे जिन्होंने सब कुछ बदल दिया: "मेरे पीछे चले आओ।"

ध्यान दो कि यीशु ने किन्हें चुना। वे सबसे होशियार विद्यार्थियों को ढूँढ़ने के लिये बड़े-बड़े विद्यालयों में नहीं गए। वे बड़े-बड़े अगुओं को खोजने राजमहल में नहीं गए। वे झील के किनारे गए और मछुओं को बुलाया। बाद में वे एक चुंगी लेनेवाले को भी बुलाते, जिससे अधिकांश लोग घृणा करते थे। यीशु ने साधारण लोगों को, उनकी सारी गलतियों समेत, चुन लिया और उन्हें संसार को बदल देनेवाले बना दिया।

यीशु ने उनसे एक प्रतिज्ञा भी की: "मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।" वे मछलियाँ पकड़ना जानते थे। अब यीशु उन्हें सिखाने वाले थे कि *लोगों* को परमेश्वर के पास कैसे लाया जाए। ध्यान दो कि यह काम कौन करता है: "मैं तुम्हें बनाऊँगा।" उन्हें यह सब अपने आप समझने की ज़रूरत नहीं थी। यीशु स्वयं उन्हें सिखाते।

और देखो कि उन्होंने कैसे उत्तर दिया: "वे तुरन्त अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।" उन्होंने यह नहीं कहा, "मुझे कुछ वर्षों तक इस पर सोचने दो।" उन्होंने यह नहीं कहा,

“शायद मछली पकड़ने का काम पूरा होने के बाद।” वे तुरन्त चल पड़े।

यीशु के पीछे चलना केवल उनके विषय में सच्ची बातों पर विश्वास करने से कहीं बढ़कर है। इसका अर्थ है वहाँ जाना जहाँ वे जाते हैं, उनसे सीखना, और उन्हें अपने आप को बदलने देना। एक **चेला** यही होता है: वह जो अपने गुरु के इतने पास-पास चलता है कि उसी के समान बन जाता है।

यीशु आज भी कहते हैं, “मेरे पीछे चले आओ।” वे बच्चों से भी यही कहते हैं। उनके पीछे चलने के लिये तुम्हें अपने परिवार या अपने विद्यालय को छोड़ने की ज़रूरत नहीं। पर तुम्हें कुछ “जालों” को पीछे छोड़ना पड़ सकता है: ऐसी आदतें, मनोभाव या चीज़ें जो तुम्हें उनसे दूर रखती हैं।

शमौन, जो बाद में पतरस कहलाया, आगे चलकर हज़ारों लोगों को यीशु के विषय में बताता। और यह सब एक झील के किनारे कहे गए थोड़े से शब्दों से शुरू हुआ।

इस पर सोचो: यीशु के और पास-पास चलने के लिये ऐसा कौन-सा “जाल” हो सकता है जिसे तुम्हें पीछे छोड़ना है?

यह करके देखो: आज यीशु से पूछो, “आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?” फिर सुनो, और सबसे पहले जो बात मन में आए और जिसके विषय में तुम जानते हो कि उससे वे प्रसन्न होंगे, उसे करो।

प्रिय यीशु, आपने साधारण मछुओं को अपने पीछे चलने के लिये बुलाया, और आप मुझे भी बुलाते हैं। मैं आपके पीछे चलना चाहता हूँ। जो कुछ भी राह में रुकावट बने, उसे पीछे छोड़ने में मेरी सहायता कीजिए। मुझे वैसा व्यक्ति बना दीजिए जैसा आप मुझे बनाना चाहते हैं। आपके नाम से, आमीन।

दिन 10 — पानी से दाखरस

"उसकी माता ने सेवकों से कहा, 'जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।'"
— यूहन्ना 2:5
"यीशु ने अपने चिन्हों में से यह पहला चिन्ह गलील के काना में दिखाया। इस प्रकार उसने अपनी महिमा प्रकट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।"
— यूहन्ना 2:11

क्या तुम कभी किसी विवाह में गए हो? वहाँ संगीत होता है, नाच होता है, ढेर सारा भोजन होता है और एक आनंदमय उत्सव होता है। यीशु के समय में तो विवाह का उत्सव पूरे एक सप्ताह तक चल सकता था! और यह देखना परिवार का काम था कि हर एक के लिए भरपूर मात्रा में सब कुछ हो।

यीशु, उसकी माता मरियम और उसके चेले काना नामक एक गाँव में एक विवाह में थे। परन्तु उत्सव के बीच में ही एक शर्मिंदा कर देने वाली बात हो गई: दाखरस समाप्त हो गया। परिवार पूरे नगर के सामने लज्जित होने ही वाला था।

मरियम यीशु के पास गई और उसे इस समस्या के बारे में बताया। फिर उसने सेवकों से कहा, "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।"

पास ही पत्थर के छ: बड़े मटके रखे थे, और हर एक में बीस से तीस गैलन तक पानी समा सकता था। यीशु ने सेवकों से कहा, "मटकों में पानी भर दो।" अत: उन्होंने उन्हें मुँह तक भर दिया। फिर यीशु ने कहा, "अब थोड़ा निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाओ।"

जब प्रधान ने उसे चखा, तो पानी दाखरस बन चुका था, और वह भी कोई साधारण दाखरस नहीं। वह तो पूरे उत्सव का सबसे उत्तम दाखरस था! वह चकित रह गया।

यूहन्ना इसे "उसके चिन्हों में से पहला चिन्ह" कहता है। चिन्ह किसी बात की ओर संकेत करता है। इस चमत्कार ने इस ओर संकेत किया कि यीशु कौन है। केवल सृष्टिकर्ता ही पानी

को किसी नई वस्तु में बदल सकता है। और यूहन्ना कहता है, "इस प्रकार उसने अपनी महिमा प्रकट की, और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया।"

यह कहानी हमें दिखाती है कि यीशु हमारी रोज़मर्रा की समस्याओं की चिन्ता करता है। दाखरस का समाप्त हो जाना कोई जीवन-मरण का प्रश्न नहीं था। यह तो उत्सव में हुई एक शर्मिंदगी भरी समस्या थी। परन्तु यीशु ने परवाह की, और उसने सहायता की। तुम भी अपनी रोज़मर्रा की समस्याएँ यीशु के पास ला सकते हो, यहाँ तक कि वे भी जो छोटी-सी लगती हैं।

और मरियम के शब्दों को अनदेखा मत करना: "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।" यह आज भी सबसे उत्तम सलाह है जो कोई दे सकता है। सेवक समझ नहीं पाए कि यीशु उनसे मटकों में पानी क्यों भरवाना चाहता था। परन्तु उन्होंने आज्ञा मानी, और उन्होंने एक चमत्कार देखा।

इस पर विचार करो: ऐसी कौन-सी रोज़मर्रा की समस्या है जिसे तुम यीशु के पास ला सकते हो, पर जिसके बारे में तुमने अब तक प्रार्थना नहीं की है?

यह करके देखो: मरियम के शब्दों को आज के लिए अपना ध्येय-वाक्य बना लो: "जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।" जब तुम्हें कोई निर्णय लेना हो, तो पूछो कि यीशु क्या चाहेगा, और वही करो।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि तू केवल बड़ी समस्याओं की ही नहीं, बल्कि मेरी रोज़मर्रा की समस्याओं की भी चिन्ता करता है। मेरी सहायता कर कि मैं हर बात तेरे पास लाऊँ। सेवकों के समान, मेरी सहायता कर कि जो कुछ तू मुझ से कहे, मैं वही करूँ, चाहे मैं समझ न पाऊँ कि क्यों। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 11 — रात में नीकुदेमुस

"फरीसियों में से नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य था, जो यहूदियों का एक सरदार था। वह रात के समय यीशु के पास आया और बोला, 'हे रब्बी, हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से आया हुआ गुरु है, क्योंकि जो चिन्ह तू दिखाता है, उन्हें कोई नहीं दिखा सकता जब तक परमेश्वर उसके साथ न हो।' यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुझ से सच सच कहता हूँ, जब तक कोई नये सिरे से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता।'"

— यूहन्ना 3:1–3 (BSB)

नीकुदेमुस एक बड़ा आदमी था। वह एक **फरीसी** था — उस समूह का सदस्य जो परमेश्वर की व्यवस्था को बड़े ध्यान से पढ़ता था और हर नियम को मानने का भरपूर प्रयत्न करता था। वह अपने लोगों का एक सरदार भी था। यदि कोई परमेश्वर के योग्य दिखता था, तो वह नीकुदेमुस ही था।

परन्तु नीकुदेमुस के मन में यीशु के विषय में कुछ प्रश्न थे। इसलिये वह रात के समय यीशु से मिलने आया — शायद इसलिये कि वह नहीं चाहता था कि दूसरे सरदार उसे देखें।

नीकुदेमुस ने आदर के साथ आरम्भ किया: "हम जानते हैं कि तू परमेश्वर की ओर से आया हुआ गुरु है।" परन्तु यीशु सीधे असली बात पर आ गए: "जब तक कोई **नये सिरे से न जन्मे**, वह परमेश्वर के राज्य को देख नहीं सकता।"

नीकुदेमुस उलझन में पड़ गया। उसने पूछा, "मनुष्य बूढ़ा होने पर कैसे जन्म ले सकता है?" वह सोच रहा था कि कोई दूसरी बार शिशु के रूप में जन्म ले — जो असम्भव है!

परन्तु यीशु उस तरह के जन्म की बात नहीं कर रहे थे। वे आत्मा से जन्म लेने की बात कर रहे थे। जब तुम पहली बार जन्मे, तो तुम्हें शारीरिक जीवन मिला। जब तुम नये सिरे से जन्म लेते हो, तो परमेश्वर तुम्हें **नया आत्मिक जीवन** देता है। पवित्र आत्मा तुम में वास करने आता है, और तुम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हो।

यीशु ने इसकी तुलना हवा से की। “हवा जिधर चाहती है उधर बहती है। तू उसकी आवाज़ सुनता है, परन्तु नहीं जानता कि वह कहाँ से आती और कहाँ को जाती है।” तुम हवा को देख नहीं सकते, पर तुम देख सकते हो कि वह पेड़ों और पतंगों के साथ क्या करती है। आत्मा के साथ भी ऐसा ही है। तुम उसे देख नहीं सकते, परन्तु तुम देख सकते हो कि वह लोगों को कैसे बदल देता है।

यहाँ बड़ी सीख है। नीकुदेमुस धार्मिक था। वह बाइबल जानता था। वह बहुत से नियम मानता था। परन्तु इतना काफी नहीं था। बाहर से भला होना तुम्हारे भीतर नया जीवन नहीं दे सकता। केवल परमेश्वर ही यह कर सकता है।

कुछ ही वाक्यों के बाद, यीशु ने नीकुदेमुस को बाइबल का सबसे प्रसिद्ध पद बताया: यूहन्ना 3:16। परमेश्वर हर उस व्यक्ति को नया जीवन देता है जो उसके पुत्र पर विश्वास करता है।

इस पर सोचो: बहुत धार्मिक होना और बहुत से नियम मानना नीकुदेमुस के लिये काफी क्यों नहीं था?

यह करके देखो: यूहन्ना 3:1–16 में बाकी की बातचीत पढ़ो। ध्यान दो कि यह एक ऐसे पद पर समाप्त होती है जिसे तुम शायद पहले से ही जानते हो।

हे परमेश्वर, धन्यवाद कि तू हर उस व्यक्ति को नया जीवन देता है जो यीशु पर विश्वास करता है। मैं जानता हूँ कि मैं बाहर से भला बनकर स्वयं को तेरे साथ धर्मी नहीं ठहरा सकता। धन्यवाद कि तूने अपना आत्मा भेजा ताकि वह मुझे भीतर से नया बना दे। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 12 — जीवन का जल

"यीशु ने उससे कहा, 'जो कोई यह जल पिएगा वह फिर प्यासा होगा, परन्तु जो कोई उस जल में से पिएगा जो मैं उसे दूँगा, वह कभी प्यासा न होगा। वरन् जो जल मैं उसे दूँगा, वह उसमें एक ऐसा सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिये उमड़ता रहेगा।'"

— यूहन्ना 4:13–14 (BSB)

क्या तुम कभी सचमुच, बहुत ज़्यादा प्यासे हुए हो? शायद किसी गरम दिन में बाहर खूब दौड़-भाग करने के बाद? तब ठण्डे पानी का एक गिलास दुनिया की सबसे अच्छी चीज़ लगता है। परन्तु कुछ ही घण्टों बाद तुम फिर प्यासे हो जाते हो।

एक दिन यीशु सामरिया नाम के इलाके में से होकर जा रहे थे। चलते-चलते वे थक गए थे, इसलिये एक पुराने कुएँ के पास बैठ गए। एक स्त्री पानी भरने आई, और यीशु ने उससे कहा, "मुझे पानी पिला।"

वह चौंक गई। उसने कहा, "तू तो यहूदी है। तू मुझ सामरी स्त्री से पानी कैसे माँगता है?" उन दिनों यहूदी और सामरी आपस में बिल्कुल मेल नहीं रखते थे। वे एक-दूसरे से बचते थे। अधिकांश यहूदी गुरु तो ऐसी स्त्री से सबके सामने बात तक नहीं करते थे। परन्तु यीशु को इन दीवारों की परवाह नहीं थी। उन्हें उस स्त्री की परवाह थी।

फिर यीशु ने उसे एक और ही तरह के जल के विषय में बताया: **जीवन का जल**। "जो कोई उस जल में से पिएगा जो मैं उसे दूँगा, वह कभी प्यासा न होगा।"

वे किस बात की बात कर रहे थे? यीशु जानते थे कि यह स्त्री भीतर से प्यासी थी। उसने रिश्तों में खुशी ढूँढ़ने की कोशिश की थी, परन्तु उसका जीवन दुःख से भरा था, और नगर के लोग उसे नीचा समझते थे। वह प्रेम के लिये, अपनाए जाने के लिये और किसी ऐसी चीज़ के लिये प्यासी थी जो सचमुच सन्तुष्ट करे।

बहुत से लोग इसी तरह प्यासे हैं। वे लोकप्रियता, चीज़ों, जीत, फॉलोअर्स या मौज-मस्ती से अपने को भरने की कोशिश करते हैं। ये चीज़ें कुछ समय के लिये अच्छी लग सकती हैं। परन्तु फिर तुम प्यासे हो जाते हो। केवल यीशु ही तुम्हारे मन की सबसे गहरी प्यास को बुझा सकते हैं। वे ऐसा नया जीवन देते हैं जो उमड़ता ही रहता है, उस सोते के समान जो कभी नहीं सूखता।

वह स्त्री इतनी उत्साहित हो गई कि अपना घड़ा वहीं छोड़कर नगर की ओर दौड़ गई। उसने सबसे कहा, "आओ, एक मनुष्य को देखो जिसने मुझे वह सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है!" और उसके कारण बहुत से लोग यीशु पर विश्वास करने लगे।

यीशु ने एक प्यासी स्त्री तक पहुँचने के लिये हर दीवार को पार किया। वे तुम तक पहुँचने के लिये भी हर दीवार पार करेंगे।

इस पर सोचो: तुम्हारी उम्र के लोग खुश या ख़ास महसूस करने के लिये किस चीज़ से "पीने" की कोशिश करते हैं? क्या वह टिकती है?

यह करके देखो: आज जब भी तुम पानी पिओ, एक छोटी प्रार्थना कहो: "यीशु, केवल तू ही है जो मुझे सन्तुष्ट करता है।"

हे यीशु, धन्यवाद कि तूने कुएँ की उस स्त्री तक पहुँचने के लिये हर दीवार पार की। धन्यवाद कि तू जीवन का जल देता है। जब मैं ऐसी चीज़ों से भरने की कोशिश करूँ जो नहीं टिकतीं, तब मुझे याद दिला कि केवल तू ही मेरे मन को सन्तुष्ट कर सकता है। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 13 — हवा भी आज्ञा मानती है

"तब यीशु ने उठकर हवा को डाँटा और झील से कहा, 'चुप रह! थम जा!' और हवा थम गई और बड़ा चैन हो गया। उसने उनसे कहा, 'तुम क्यों इतने डरते हो? क्या अब तक तुम में विश्वास नहीं?' वे अत्यन्त डर गए और आपस में कहने लगे, 'यह कौन है, कि हवा और झील भी उसकी आज्ञा मानते हैं?'"

— मरकुस 4:39–41 (BSB)

वह उपदेश देने का एक लम्बा दिन रहा था। उस सन्ध्या यीशु ने अपने चेलों से कहा, "आओ, झील के उस पार चलें।" इसलिये वे एक नाव पर चढ़कर चल दिए।

फिर एक तेज़ आँधी उठ आई। गलील की झील पहाड़ियों से घिरी हुई है, और अचानक बिना किसी चेतावनी के उस पर आँधियाँ टूट पड़ती हैं। बड़ी-बड़ी लहरें नाव के किनारों पर टकराने लगीं। नाव में पानी भरने लगा। कुछ चेले अनुभवी मछुए थे, फिर भी *वे* भी बुरी तरह डर गए। उन्हें पक्का लगा कि वे अब डूब ही जाएँगे।

और यीशु कहाँ थे? वे नाव के पिछले भाग में एक तकिये पर **गहरी नींद में सो रहे थे**।

चेलों ने उन्हें जगाया और चिल्लाकर कहा, "हे गुरु, क्या तुझे चिन्ता नहीं कि हम नष्ट हुए जा रहे हैं?"

यीशु उठे। वे हवा और लहरों से ऐसे बोले जैसे कोई भौंकते हुए कुत्ते से बोलता है: "चुप रह! थम जा!" और तुरन्त हवा थम गई। लहरें शान्त हो गईं। सब कुछ बिल्कुल चैन में हो गया।

फिर यीशु अपने चेलों की ओर मुड़े और पूछा, "तुम क्यों इतने डरते हो? क्या अब तक तुम में विश्वास नहीं?"

अब चेले पहले डरे हुए से भी कहीं अधिक चकित थे। वे आपस में कहने लगे, "यह कौन है, कि हवा और झील भी उसकी आज्ञा मानते हैं?"

यही तो बड़ा प्रश्न है, है न? केवल परमेश्वर ही मौसम पर अधिकार रखता है। केवल सृष्टिकर्ता ही समुद्र को बता सकता है कि उसे क्या करना है। यह कहानी हमें दिखाती है कि

यीशु ही परमेश्वर हैं।

यह हमें हमारे जीवन की आँधियों के विषय में भी कुछ दिखाती है। यीशु के पीछे चलने का यह अर्थ नहीं कि तुम्हें कभी आँधियों का सामना नहीं करना पड़ेगा। चेले तो इसीलिये नाव में थे *क्योंकि* उन्होंने यीशु की आज्ञा मानी थी, फिर भी आँधी आई। तुम्हें भी आँधियों का सामना करना पड़ सकता है: कोई डरावनी बीमारी, घर की कोई समस्या, किसी दोस्ती का टूट जाना।

परन्तु याद रखो कि उनके साथ नाव में कौन था। जब यीशु तुम्हारी नाव में हैं, तब आँधी जीत नहीं सकती। हो सकता है वे तुम्हारे चारों ओर की आँधी को शान्त कर दें। या हो सकता है वे तुम्हारे भीतर की आँधी को शान्त कर दें। किसी भी हाल में, अधिकार उन्हीं का है।

इस पर सोचो: अभी तुम्हारे जीवन में कौन-सी "आँधी" है जिसके साथ तुम्हें यीशु पर भरोसा करने की ज़रूरत है?

यह करके देखो: अगली बार जब तुम डर महसूस करो, तब चेलों का पूछा हुआ प्रश्न याद करो: "यह कौन है?" फिर उसका उत्तर दो: "यीशु वही है जिसकी हवा भी आज्ञा मानती है।"

हे यीशु, तू इतना सामर्थी है कि हवा और लहरें भी तेरी आज्ञा मानती हैं। जब मेरे जीवन में आँधियाँ आएँ, तब मुझे घबराने न दे, वरन् तुझ पर भरोसा करने में मेरी सहायता कर। धन्यवाद कि तू सदा मेरी नाव में है। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 14 — एक लड़के का भोजन

"'यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ हैं। परन्तु इतने लोगों में ये क्या हैं?' यीशु ने कहा, 'लोगों को बैठा दो।' उस जगह बहुत घास थी, इसलिये लगभग पाँच हज़ार पुरुष बैठ गए। तब यीशु ने रोटियाँ लीं, और धन्यवाद करके बैठनेवालों को जितना वे चाहते थे उतना बाँट दिया।"
— यूहन्ना 6:9–11 (BSB)

एक बड़ी भीड़ यीशु के पीछे-पीछे एक पहाड़ी पर चढ़ गई थी। लोग उन्हें उपदेश देते सुनना और बीमारों को चंगा करते देखना चाहते थे। वहाँ स्त्रियों और बच्चों के अलावा लगभग पाँच हज़ार पुरुष थे। और अब देर हो रही थी, और सब भूखे थे।

यीशु ने अपने चेले फिलिप्पुस की ओर मुड़कर पूछा, "हम इन लोगों के खाने के लिये रोटी कहाँ से मोल लें?" फिलिप्पुस ने हिसाब लगाया और घबरा गया। इतने रुपयों से भी सबको ज़रा-ज़रा भी खिलाने के लिये पर्याप्त रोटी नहीं आ सकती थी!

तब अन्द्रियास ने बोलना शुरू किया। उसे एक लड़का मिला था जिसके पास भोजन था: जौ की पाँच छोटी रोटियाँ और दो छोटी मछलियाँ। जौ की रोटी सस्ती रोटी थी, जिसे गरीब लोग खाते थे। यह तो एक बच्चे के बराबर का भोजन था। अन्द्रियास ने स्वयं कहा, "परन्तु इतने लोगों में ये क्या हैं?"

परन्तु यीशु ने उस लड़के का भोजन ले लिया। उन्होंने उसके लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। फिर वे उसे बाँटने लगे, और वह बँटता ही चला गया। सबने "जितना वे चाहते थे" उतना खाया। जब सब खा चुके, तो चेलों ने बचा हुआ इकट्ठा किया, और वह **बारह टोकरियाँ भर** था। अन्त में शुरुआत से भी अधिक बचा हुआ था!

हम उस लड़के का नाम नहीं जानते। परन्तु सोचो उसने क्या किया। उसके पास थोड़ा ही था, और शायद वह इतना छोटा लगता था कि किसी काम न आएगा। वह उसे अपने ही लिये रख सकता था। पर इसके बजाय उसने वह यीशु को दे दिया।

यीशु ऐसे ही काम करते हैं। वे छोटी-छोटी चीज़ें लेते हैं और उनसे बड़े-बड़े काम करते हैं। तुम सोच सकते हो, *मैं तो बस एक बच्चा हूँ। मैं क्या कर सकता हूँ?* परन्तु जब तुम अपने पास जो है वह यीशु को दे देते हो — चाहे थोड़े पैसे हों, थोड़ा समय हो, कोई छोटी प्रतिभा हो या एक भला वचन हो — तब वे उसे तुम्हारी कल्पना से कहीं बढ़कर बढ़ा सकते हैं।

तुम्हारा काम पाँच हज़ार लोगों को खिलाना नहीं है। तुम्हारा काम तो बस यीशु को अपना भोजन देना है। बाकी की चिन्ता वे स्वयं करेंगे।

इस पर सोचो: तुम्हारे पास कौन-सा "छोटा भोजन" है जो तुम यीशु को दे सकते हो? यह कोई प्रतिभा, तुम्हारा समय, तुम्हारे पैसे या कुछ और हो सकता है।

यह करके देखो: आज कुछ छोटा दो: कोई नाश्ता बाँटो, अपनी कुछ जेबखर्च दो, किसी की पढ़ाई में मदद करो, या कोई भला नोट लिखो। ऐसा करते समय उसे यीशु को अर्पित कर दो।

हे यीशु, धन्यवाद कि तू छोटी चीज़ें लेकर उनसे बड़े काम कर सकता है। मेरे पास बहुत कुछ नहीं है, पर जो है वह मैं तुझे देता हूँ। कृपया मुझे और मेरे दिए हुए को औरों की सहायता के लिये, और अपनी महानता दिखाने के लिये काम में ले। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 15 — पानी पर चलना

"यीशु ने कहा, 'आ।' तब पतरस नाव पर से उतरकर पानी पर चलते हुए यीशु की ओर बढ़ा। परन्तु जब उसने आँधी को देखा तो डर गया, और डूबने लगा, और चिल्लाकर कहा, 'हे प्रभु, मुझे बचा!' यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया और कहा, 'हे अल्पविश्वासी, तूने क्यों सन्देह किया?'"
— मत्ती 14:29–31 (BSB)

आधी रात का समय था। चेले झील पर अपनी नाव में थे, हवा के विरुद्ध ज़ोर लगाकर खे रहे थे, पर कहीं नहीं पहुँच पा रहे थे। यीशु प्रार्थना करने के लिये अकेले पहाड़ पर रह गए थे।

फिर, पौ फटने से कुछ पहले, उन्होंने किसी को अपनी ओर आते देखा, जो **पानी के ऊपर चल रहा था**! वे चीख उठे, "यह तो भूत है!"

परन्तु यीशु ने पुकारकर कहा, "ढाढ़स रखो! मैं ही हूँ। मत डरो।"

पतरस, जो हमेशा सबसे पहले बोल पड़ता था, ने पुकारकर कहा, "हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे आज्ञा दे कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ।"

यीशु ने कहा, "आ।"

और पतरस ने वह किया जो यीशु के सिवा और किसी ने कभी नहीं किया। उसने नाव के किनारे से पाँव बाहर निकाला, लहरों पर उतर पड़ा और पानी पर चलते हुए यीशु की ओर बढ़ा!

परन्तु फिर पतरस ने इधर-उधर देखा। उसने देखा कि हवा कितनी तेज़ थी और लहरें कितनी बड़ी थीं। वह डर गया, और डूबने लगा। उसने चिल्लाकर कहा, "हे प्रभु, मुझे बचा!"

यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया।

अन्तर किस बात से पड़ा? जब पतरस ने अपनी **निगाह यीशु पर** टिकाए रखी, तो वह पानी पर चलता रहा। जब उसने हवा और लहरों की ओर देखा, तो वह डूबने लगा।

हमारे लिये भी यही सच है। जब तुम अपनी समस्याओं पर ध्यान लगाते हो, तो वे बहुत बड़ी और डरावनी लगती हैं, और तुम डूबने लगते हो। जब तुम यीशु पर ध्यान लगाते हो, तो तुम्हें याद आता है कि वे हर समस्या से बड़े हैं।

और दो और बातों पर ध्यान दो। पहली, केवल पतरस ही इतना साहसी था कि नाव से बाहर निकला। बाकी सब सुरक्षित और सूखे बैठे रहे। पतरस का विश्वास पूरा तो नहीं था, पर उसने कदम बढ़ाया।

दूसरी, जब पतरस डूबने लगा तब भी यीशु ने उसे डूबने नहीं दिया। जैसे ही उसने पुकारा, यीशु ने उसे थाम लिया। जब तुम असफल हो जाओ, जब तुम्हारा विश्वास कमज़ोर हो, तब भी तुम पुकार सकते हो, "हे प्रभु, मुझे बचा!" वे सदा अपना हाथ बढ़ाएँगे।

इस पर सोचो: अभी कौन-सी "हवा और लहरें" तुम्हारी निगाह यीशु पर से हटा रही हैं?

यह करके देखो: कहीं ऐसी जगह "निगाह यीशु पर" लिखो जहाँ तुम्हें बार-बार दिखे। आज जब तुम चिन्ता करने लगो, तो रुककर अपने विचार उसकी ओर मोड़ दो।

हे यीशु, मेरी सहायता कर कि मैं अपनी निगाह हवा और लहरों पर नहीं, वरन् तुझ पर टिकाए रखूँ। जब मैं डरूँ, तब मुझे विश्वास में कदम बढ़ाने का साहस दे। और जब मैं डूबने लगूँ, तब धन्यवाद कि तू सदा मुझे बचाने के लिये अपना हाथ बढ़ाता है। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 16 — "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?"

"यीशु ने उससे पूछा, 'तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?' उस अंधे ने कहा, 'हे रब्बोनी, यह कि मैं फिर से देखने लगूँ।' यीशु ने उससे कहा, 'जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।' और वह तुरन्त देखने लगा और मार्ग में यीशु के पीछे हो लिया।"
— मरकुस 10:51–52 (BSB)

बरतिमाई अंधा था। वह काम नहीं कर सकता था, इसलिये हर दिन यरीहो नगर के बाहर सड़क के किनारे बैठकर पैसे माँगता था। दिन भर लोग उसके पास से होकर गुज़रते रहते थे। उनमें से अधिकांश शायद उसकी ओर देखते तक न थे।

एक दिन बरतिमाई ने एक बड़ी भीड़ को आते हुए सुना। किसी ने उसे बताया कि यीशु नासरी वहाँ से जा रहे हैं। बरतिमाई ने यीशु के विषय में सुना था। वह जानता था कि यीशु ने लोगों को चंगा किया है। इसलिये वह जितने ज़ोर से चिल्ला सकता था, चिल्लाने लगा: "हे यीशु, दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!"

उसके आस-पास के लोग झुँझला उठे। उन्होंने उससे कहा, "चुप रह!" परन्तु बरतिमाई ने हार नहीं मानी। वह और भी ज़ोर से चिल्लाया: "हे दाऊद की सन्तान, मुझ पर दया कर!"

और यीशु **रुक गए**। सारी भीड़ उनके साथ रुक गई। यीशु ने कहा, "उसे बुलाओ।" बरतिमाई अपना कपड़ा फेंककर उछल पड़ा और यीशु के पास आया।

तब यीशु ने उससे एक प्रश्न पूछा: "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?"

यह एक दिलचस्प प्रश्न है। क्या यह साफ़ नहीं था? वह आदमी तो अंधा था! परन्तु यीशु चाहते थे कि बरतिमाई माँगे। इसलिये बरतिमाई ने कहा, "यह कि मैं फिर से देखने लगूँ।" और यीशु ने कहा, "जा, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है।" उसी क्षण बरतिमाई देखने लगा! और अपनी नई आँखों से उसने सबसे पहले जो काम किया, वह था मार्ग में यीशु के पीछे चलना।

यह कहानी हमें प्रार्थना के विषय में सिखाती है।

हार मत मानो। लोगों ने बरतिमाई से चुप रहने को कहा, पर वह पुकारता ही रहा। कभी-कभी लगता है कि हमारी प्रार्थनाएँ काम नहीं कर रहीं, परन्तु यीशु चाहते हैं कि हम माँगते रहें।

सच्चे और साफ़ रहो। यीशु ने पूछा, "तू क्या चाहता है?" वे चाहते हैं कि तुम अपने ही शब्दों में उन्हें बताओ कि तुम्हें सचमुच किस बात की ज़रूरत है।

यीशु तुम्हारे लिये रुकते हैं। एक बड़ी भीड़ में यीशु एक गरीब, अंधे भिखारी के लिये रुक गए, जिसे बाकी सब अनदेखा कर रहे थे। वे तुम्हारे लिये भी कभी इतने व्यस्त नहीं होते।

और जब यीशु तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दें, तो वही करो जो बरतिमाई ने किया: उनके पीछे चलो।

इस पर सोचो: यदि यीशु अभी तुमसे पूछें, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?" तो तुम क्या कहोगे?

यह करके देखो: आज प्रार्थना में यीशु के प्रश्न का सच्चाई से उत्तर दो। साफ़-साफ़ बताओ। फिर उसे लिख लो ताकि तुम देख सको कि वे कैसे उत्तर देते हैं।

हे यीशु, धन्यवाद कि तू उन लोगों के लिये रुकता है जो तुझे पुकारते हैं। धन्यवाद कि तू पूछता है कि मुझे किस बात की ज़रूरत है। मैं चाहता हूँ कि तू मेरे लिये यह करे: [उसे बताओ]। मेरी सहायता कर कि मैं माँगता रहूँ और कभी हार न मानूँ। और मेरी सहायता कर कि जहाँ कहीं तू जाए, मैं तेरे पीछे चलूँ। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 17 — बालकों को आने दो

"लोग छोटे बच्चों को यीशु के पास ला रहे थे कि वे उन पर हाथ रखें, परन्तु चेलों ने लानेवालों को डाँटा। यह देखकर यीशु क्रोधित हुए और उनसे कहा, 'बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत रोको, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।'"
— मरकुस 10:13–14 (BSB)

क्या तुमसे कभी कहा गया है, "अभी नहीं, बड़े लोग बात कर रहे हैं"? या क्या तुम्हें कभी ऐसा लगा है कि बड़े लोग तुम्हारे लिये बहुत व्यस्त हैं?

एक दिन माता-पिता अपने बच्चों को यीशु के पास ला रहे थे, इस आशा से कि वे उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दें। परन्तु चेलों ने उन्हें रोकने की कोशिश की। शायद उन्होंने सोचा कि यीशु बच्चों के लिये बहुत बड़े हैं। शायद उन्होंने सोचा कि उनके पास और भी गम्भीर काम हैं। उन्होंने माता-पिता से चले जाने को कहा।

जब यीशु ने यह देखा, तो वे **क्रोधित** हुए। इसका अर्थ है कि वे दुखी हुए, यहाँ तक कि नाराज़ भी। सुसमाचारों में यीशु प्रायः क्रोधित नहीं होते। परन्तु जब लोगों ने बच्चों को उनके पास आने से रोकना चाहा, तब वे क्रोधित हो गए!

उन्होंने कहा, "बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मत रोको!" (*रोकना* का अर्थ है बीच में बाधा डालना।) फिर उन्होंने बच्चों को अपनी गोद में लिया, उन पर हाथ रखे और उन्हें आशीष दी।

क्या तुम इसकी कल्पना कर सकते हो? परमेश्वर का पुत्र, वही जिसने आँधियों को शान्त किया और बीमारों को चंगा किया, सब कुछ छोड़कर बच्चों को गले लगा रहा है और उनके लिये प्रार्थना कर रहा है।

तुम्हारे लिये इसका यह अर्थ है: **यीशु तुझे चाहता है।** वे नहीं समझते कि तुम बहुत छोटे, बहुत नन्हे या बहुत तुच्छ हो। यीशु के पीछे चलने के लिये तुम्हें बड़ा होने तक रुकना नहीं है। अभी, आज ही, तुम्हारा उनके पास आना स्वागतयोग्य है।

फिर यीशु ने और भी चौंका देनेवाली बात कही: "परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।" दूसरे शब्दों में, बड़े लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिये *बच्चों के समान* बनना होगा।

उनका क्या अर्थ था? छोटे बच्चे भरोसा करते हैं। वे हर बात के लिये अपने माता-पिता पर निर्भर रहते हैं। वे यह दिखावा नहीं करते कि उन्हें सब कुछ समझ में आ गया है। वे भेंट खुले हाथों से लेते हैं। परमेश्वर के पास सबको इसी तरह आना है: घमण्ड या आत्मनिर्भरता के साथ नहीं, वरन् पूरी तरह उस पर भरोसा करते हुए।

तो तुम परमेश्वर के राज्य में केवल स्वागतयोग्य ही नहीं हो। तुम तो बड़ों के लिये एक उदाहरण हो कि उन्हें कैसे आना चाहिए!

इस पर सोचो: यह जानकर तुम्हें कैसा लगता है कि जब लोगों ने बच्चों को यीशु के पास आने से रोकना चाहा, तब वे क्रोधित हो गए?

यह करके देखो: क्या कोई छोटा बच्चा है जिसे तुम "यीशु के पास आने" में मदद कर सको? शायद तुम उसे कोई बाइबल की कहानी पढ़कर सुनाओ, कोई भजन सिखाओ या उसके साथ प्रार्थना करो।

हे यीशु, धन्यवाद कि तेरे पास बच्चों के लिये सदा समय होता है। धन्यवाद कि तू मेरा स्वागत करता है और चाहता है कि मैं तेरे पास आऊँ। मेरी सहायता कर कि मैं अपने पूरे मन से एक बच्चे के समान तुझ पर भरोसा करूँ। और मेरी सहायता कर कि मैं औरों को तेरे पास आने से कभी न रोकूँ। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 18 — लाजर, निकल आ!

"यीशु ने उससे कहा, 'पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह चाहे मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक कभी न मरेगा। क्या तू इस पर विश्वास करती है?'"

— यूहन्ना 11:25–26 (BSB)

लाजर और उसकी बहनें, मरियम और मार्था, यीशु के सबसे घनिष्ठ मित्रों में से थे। जब लाजर बहुत बीमार पड़ गया, तो उसकी बहनों ने यीशु को सन्देश भेजा: "हे प्रभु, जिससे तू प्रेम रखता है वह बीमार है।" उन्हें पक्का था कि यीशु उसे चंगा करने के लिये तुरन्त दौड़े आएँगे।

परन्तु यीशु जाने से पहले दो दिन और रुके रहे। जब तक वे पहुँचे, तब तक लाजर मर चुका था। वह चार दिन से कब्र में पड़ा हुआ था।

मार्था दौड़कर यीशु से मिलने आई और बोली, "हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई न मरता।" क्या तुम्हें कभी ऐसा लगा है? *हे परमेश्वर, तू कहाँ था? तूने इसे क्यों नहीं रोका?*

यीशु ने अब तक कहे अपने कुछ सबसे अद्भुत वचनों से उत्तर दिया: "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह चाहे मर भी जाए, तौभी जीएगा।"

फिर मरियम यीशु के पास आई। उन्होंने उसे रोते हुए देखा, और उन मित्रों को भी जो उसके साथ रो रहे थे। और बाइबल कहती है, "यीशु रोया" (यूहन्ना 11:35)। यह बाइबल का सबसे छोटा पद है, परन्तु सबसे महत्वपूर्ण पदों में से एक। यीशु जानते थे कि वे अभी लाजर को फिर से जिला देनेवाले हैं, फिर भी वे रोए। वे अपने मित्रों के साथ दुखी हुए। उन्हें उनके दुःख की परवाह थी।

फिर यीशु ने उनसे कहा कि कब्र पर से पत्थर हटा दें। मार्था को चिन्ता हुई कि चार दिन बाद तो उसमें से बुरी गन्ध आएगी! परन्तु यीशु ने प्रार्थना की, और फिर ऊँचे शब्द से पुकारा, "**लाजर, निकल आ!**"

और लाजर निकल आया। वह मनुष्य जो मर चुका था, कफ़न में लिपटा हुआ ही कब्र से बाहर चला आया!

यह कहानी हमें दिखाती है कि यीशु स्वयं मृत्यु से भी अधिक सामर्थी हैं। मृत्यु वह एक बैरी है जिसे कोई हरा नहीं सकता, परन्तु यीशु ने उसे हरा दिया। और वे प्रतिज्ञा करते हैं कि हर वह व्यक्ति जो उन पर विश्वास करता है, वह चाहे उसकी देह मर भी जाए, सदा जीवित रहेगा। जो यीशु पर भरोसा करते हैं, उनके लिये मृत्यु अन्त नहीं है। यह तो सो जाने और फिर उसके साथ जाग उठने के समान है।

यह हमें यह भी दिखाती है कि जब हम दुखी होते हैं, तब यीशु केवल इतना ही नहीं कहते कि खुश हो जाओ। वे हमारे साथ रोते हैं।

इस पर सोचो: यीशु ने मार्था से पूछा, "क्या तू इस पर विश्वास करती है?" तुम उन्हें क्या उत्तर दोगे?

यह करके देखो: यदि तुम किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जो इसलिये दुखी है कि उसका कोई प्रियजन मर गया है, तो आज उसके लिये प्रार्थना करो। तुम उसे कोई भला नोट भी भेज सकते हो।

हे यीशु, पुनरुत्थान और जीवन तू ही है। धन्यवाद कि तू मृत्यु से भी अधिक बलवन्त है। धन्यवाद कि जब मैं दुखी होता हूँ तब तुझे परवाह होती है, और तू मेरे साथ रोता है। मैं तुझ पर विश्वास करता हूँ, और मुझे भरोसा है कि तू मुझे ऐसा जीवन देगा जो कभी समाप्त नहीं होता। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 19 — उलटी-पुलटी खुशी

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएँगे। धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे-प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे। धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।"
— मत्ती 5:3–9 (BSB)

एक दिन यीशु एक पहाड़ पर चढ़ गए, बैठ गए और उपदेश देने लगे। यह उपदेश **पहाड़ी उपदेश** कहलाता है, और शायद यह अब तक दिया गया सबसे प्रसिद्ध उपदेश है। उन्होंने ऐसे लोगों की एक सूची से आरम्भ किया जिन्हें उन्होंने "धन्य" कहा। *धन्य* का अर्थ है भीतर से सचमुच खुश, क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे साथ और तुम्हारे पक्ष में है।

परन्तु यीशु की सूची चौंका देनेवाली है। यदि तुम अधिकांश लोगों से पूछो कि कौन खुश है, तो वे कहेंगे: धनी, लोकप्रिय, बलवान, जीतनेवाले। यीशु ने यह सब उलटा-पुलटा कर दिया।

आओ, कुछ पर नज़र डालें:

"धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं।" इसका अर्थ है वे लोग जो जानते हैं कि उन्हें परमेश्वर की ज़रूरत है। वे यह दिखावा नहीं करते कि उनके पास सब कुछ है। वे जानते हैं कि वे स्वयं को नहीं बचा सकते।

"धन्य हैं वे जो शोक करते हैं।" वे लोग जो दुखी हैं, विशेषकर पाप के कारण और संसार के टूटेपन के कारण। परमेश्वर उन्हें शान्ति देने की प्रतिज्ञा करता है।

"धन्य हैं वे जो नम्र हैं।" नम्र का अर्थ कमज़ोर नहीं है। इसका अर्थ है वश में की हुई शक्ति: सौम्य, दीन और दबंग नहीं।

"धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे-प्यासे हैं।" वे लोग जो उतनी ही तीव्रता से भला करना चाहते हैं जितनी तीव्रता से एक भूखा व्यक्ति भोजन चाहता है।

"धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं।" वे लोग जो क्षमा करते और कृपा दिखाते हैं, तब भी जब कोई इसके योग्य न हो।

"धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं।" वे लोग जिनके मन साफ़ हैं और जो बिना किसी दिखावे के परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

"धन्य हैं वे जो मेल कराते हैं।" वे लोग जो औरों को मिल-जुलकर रहने में मदद करते हैं और झगड़े शुरू करने के बजाय उन्हें समाप्त करने का प्रयत्न करते हैं।

संसार कहता है, "सबसे आगे बढ़ो। अपना ही ध्यान रखो। हर हाल में जीतो।" यीशु कहते हैं कि सचमुच खुश जीवन बहुत अलग दिखता है। वह *उन्हीं* के समान दिखता है। इनमें से हर एक बात यीशु का पूरी तरह वर्णन करती है।

तुम बहुत कोशिश करके स्वयं को ऐसा नहीं बना सकते। परन्तु जब तुम यीशु के पीछे चलते हो, तब उनका आत्मा तुम में इन बातों को उगाने लगता है।

इस पर सोचो: इन "धन्य" कहे गए वर्णनों में से कौन-सा तुम्हारे लिये सबसे कठिन है? कौन-सा तुम सबसे अधिक चाहोगे कि परमेश्वर तुम में उगाए?

यह करके देखो: आज मेल करानेवाले बनो। यदि तुम्हें घर या स्कूल में कोई झगड़ा शुरू होता दिखे, तो पक्ष लेने के बजाय उसे शान्त करने में मदद करने की कोशिश करो।

हे यीशु, तेरे मार्ग संसार के मार्गों से कितने अलग हैं। मेरी सहायता कर कि मैं मन का दीन, नम्र, दयावन्त, मन का शुद्ध और मेल करानेवाला बनूँ। मुझे भला करने का भूखा बना। मुझ में अपनी तरह की खुशी उगा। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 20 — नमक और ज्योति

"तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा है वह छिप नहीं सकता। और लोग दिया जलाकर उसे टोकरी के नीचे नहीं रखते। वरन् वे उसे दीवट पर रखते हैं, तब वह घर के सब लोगों को प्रकाश देता है। उसी प्रकार तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सामने चमके, कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।"

— मत्ती 5:14–16 (BSB)

क्या तुम कभी किसी कमरे में तब रहे हो जब बिजली चली जाती है? घोर अन्धकार हो जाता है। तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देता। तुम फर्नीचर से टकराते हो। फिर कोई एक अकेली मोमबत्ती जलाता है या फोन की टॉर्च चालू करता है, और अचानक तुम्हें दिखने लगता है। अन्धकार में एक छोटी-सी ज्योति भी बहुत बड़ा अन्तर ले आती है।

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने अपने चेलों को दो चित्र दिए कि वे कौन हैं। पहले उन्होंने कहा, "तुम पृथ्वी के **नमक** हो।" यीशु के समय में नमक बहुमूल्य था। यह भोजन में स्वाद लाता था, और माँस को सड़ने से बचाता था। यीशु के पीछे चलनेवाले नमक के समान हैं। वे संसार को बेहतर बनाते हैं और उसे बिगड़ने से बचाने में मदद करते हैं।

फिर यीशु ने कहा, "तुम जगत की **ज्योति** हो।" यीशु स्वयं जगत की ज्योति हैं (यूहन्ना 8:12)। जब तुम उनके पीछे चलते हो, तब उनकी ज्योति तुम में से होकर चमकती है।

ध्यान दो कि यीशु ने यह नहीं कहा, "ज्योति बनने की कोशिश करो।" उन्होंने कहा, "तुम ज्योति *हो*।" यदि तुम उनके हो, तो यही तुम्हारी पहचान है।

परन्तु ज्योति को छिपाया जा सकता है। यीशु ने कहा कि कोई दिया जलाकर उसे टोकरी के नीचे नहीं रखता। यह तो मूर्खता होगी! दिये का तो सारा उद्देश्य ही चमकना है।

तुम अपनी ज्योति को कैसे चमकने देते हो? यीशु ने कहा: "कि वे तुम्हारे भले कामों को देखें।" यह तुम्हारे जीने के ढंग से होता है। जब औरों धोखा दें तब ईमानदार रहना। उस बच्चे

पर दया करना जिसे सब अनदेखा करते हैं। बिना कहे सहायता करना। जब औरों निन्दा करें तब उसमें शामिल न होना। किसी को क्षमा करना जिसने तुम्हें दुख पहुँचाया। जब तुम यीशु के समान जीते हो, तब लोग ध्यान देते हैं।

और यहाँ लक्ष्य यह है: इसलिये नहीं कि लोग कहें, "वाह, कितना अच्छा बच्चा है," वरन् इसलिये कि वे "तुम्हारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें।" तुम्हारी ज्योति को *उन्हीं* की ओर इशारा करना चाहिए।

हो सकता है कुछ लोगों को तुम ही एकमात्र ज्योति दिखाई दो। शायद कोई दोस्त कलीसिया नहीं जाता और यीशु के विषय में अधिक नहीं जानता। परन्तु वह तुम्हें जानता है। तुम्हारे जीने का ढंग शायद यीशु का पहला चित्र हो जो उसे कभी मिले।

इस पर सोचो: तुम्हारे लिये अपनी ज्योति चमकने देना कहाँ सबसे कठिन है? स्कूल में, ऑनलाइन, दोस्तों के साथ, या कहीं और?

यह करके देखो: आज जान-बूझकर एक भला काम करो, किसी को परमेश्वर की ओर इशारा करने के लिये। इसके बारे में शेखी मत बघारो। बस उसे चमकने दो।

हे यीशु, तू जगत की ज्योति है, और तूने मुझे भी एक ज्योति बनाया है। मेरी सहायता कर कि मैं अपनी ज्योति को न छिपाऊँ। मेरे भले काम लोगों को तेरी ओर इशारा करें, ताकि वे मेरे स्वर्गीय पिता की स्तुति करें। तेरे नाम से, आमीन।

दिन 21 — पक्षियों को देखो

"आकाश के पक्षियों को देखो: वे न बोते, न काटते, न खत्तों में बटोरते हैं, फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?"

— मत्ती 6:26 (BSB)

तुम किस बात की चिन्ता करते हो? शायद अगले हफ़्ते की किसी परीक्षा की। शायद इस बात की कि लोग तुम्हें पसन्द करते हैं या नहीं। शायद घर की किसी बात की, या समाचार में देखी हुई किसी बात की। हर कोई कभी-न-कभी चिन्ता करता है, बच्चे भी।

पहाड़ी उपदेश में यीशु ने चिन्ता के विषय में बात की। और उन्होंने एक चौंका देनेवाली बात की: उन्होंने सबसे कहा कि जाकर पक्षियों को देखो।

उन्होंने कहा, "आकाश के पक्षियों को देखो।" पक्षी बगीचे नहीं लगाते। वे फसल नहीं काटते या खत्तों में भोजन नहीं जमा करते। उनके पास न नौकरियाँ हैं, न बैंक खाते। फिर भी वे भूखे नहीं मरते। क्यों? "तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है।"

फिर यीशु ने एक सरल प्रश्न पूछा: "क्या तुम उनसे कहीं अधिक मूल्यवान नहीं हो?"

बेशक तुम हो! परमेश्वर गौरैयों की चिन्ता करता है, पर तुम तो उसकी सन्तान हो। यदि वह पक्षियों की देखभाल करता है, तो वह तुम्हारी देखभाल कितनी अधिक करेगा?

यीशु ने यह भी कहा, "तुम में से कौन चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?" चिन्ता से कुछ नहीं बदलता। यह झूलनेवाली कुर्सी के समान है: यह तुम्हें व्यस्त तो रखती है, पर तुम्हें कहीं नहीं पहुँचाती। चिन्ता कल को ठीक नहीं कर सकती। यह तो बस आज की खुशी चुरा लेती है।

तो इसके बजाय हमें क्या करना चाहिए? कुछ ही पदों के बाद यीशु कहते हैं: "पहले तुम परमेश्वर के राज्य और धार्मिकता की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी" (मत्ती

6:33)। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर को पहला स्थान दो, और बाकी सब के लिये उस पर भरोसा रखो।

इसका यह अर्थ नहीं कि तुम्हें कभी समस्याएँ नहीं होंगी, या यह कि तुम्हें कड़ी मेहनत नहीं करनी चाहिए या आगे की योजना नहीं बनानी चाहिए। पक्षी भी अपना भोजन ढूँढ़ने के लिये कड़ी मेहनत करते हैं! इसका अर्थ यह है कि तुम्हें चिन्ता का बोझ नहीं उठाना है। तुम्हारा एक पिता है जो जानता है कि तुम्हें किस बात की ज़रूरत है और जो तुम्हारी परवाह करता है।

जब चिन्ता आए, तब तुम उसे प्रार्थना में बदल सकते हो। परमेश्वर को बताओ कि तुम किस बात की चिन्ता कर रहे हो। फिर उसे उसी के पास छोड़ दो, और पक्षियों को याद करो।

इस पर सोचो: कोई एक बात कौन-सी है जिसकी चिन्ता तुम इन दिनों करते रहे हो? उस बात में परमेश्वर पर भरोसा करना कैसा दिखेगा?

यह करके देखो: आज बाहर जाकर कुछ मिनट पक्षियों को देखो। जब भी तुम किसी को देखो, तब याद करो: "मेरा पिता उन्हें खिलाता है, और मैं उसके लिये उनसे कहीं अधिक मूल्यवान हूँ।"

हे पिता, धन्यवाद कि तू पक्षियों की देखभाल करता है, और धन्यवाद कि मैं तेरे लिये उनसे भी अधिक मूल्यवान हूँ। मैं [उसे बताओ] की चिन्ता कर रहा हूँ। मैं यह चिन्ता तुझे सौंपता हूँ। मेरी सहायता कर कि मैं पहले तुझे खोजूँ और बाकी सब के लिये तुझ पर भरोसा रखूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

दिन 22 — खोई हुई भेड़

"तुम में से ऐसा कौन है, जिसके पास सौ भेड़ें हों, और उनमें से एक खो जाए, तो वह निन्यानबे को चरागाह में छोड़कर उस खोई हुई भेड़ को, जब तक पा न ले, तब तक ढूँढ़ता न रहे? और जब वह उसे पा लेता है, तो आनन्द से उसे अपने कंधों पर उठा लेता है, और घर आकर अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके कहता है, 'मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मुझे मिल गई है!' मैं तुम से कहता हूँ, कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में स्वर्ग में इतना आनन्द होगा, जितना निन्यानबे ऐसे धर्मियों के विषय में नहीं, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं।"

— लूका 15:4–7 (BSB)

यीशु अकसर ऐसे लोगों के साथ समय बिताते थे, जिन्हें और लोग तुच्छ समझते थे: चुंगी लेनेवाले, जो लोगों को ठगते थे, और वे जो "पापी" कहलाते थे। कुछ धर्मगुरु इस पर कुड़कुड़ाते थे। "यह मनुष्य तो पापियों से मिलता है और उनके साथ खाता भी है!" वे बुड़बुड़ाते थे।

इसलिए यीशु ने उन्हें एक कहानी सुनाई।

सोचो, एक चरवाहे के पास सौ भेड़ें हैं। एक शाम वह उन्हें गिनता है: 97, 98, 99... एक कम है! अब वह क्या करता है? वह कंधे उचकाकर यह नहीं कहता, "कोई बात नहीं, अब भी तो निन्यानबे मेरे पास हैं।" वह बाकी भेड़ों को चरागाह में सुरक्षित छोड़ देता है और उस खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ने निकल पड़ता है। वह पहाड़ियों पर और घाटियों में, शायद अँधेरे और ठंड में, उसे तब तक ढूँढ़ता है, **जब तक वह उसे पा नहीं लेता**।

जब आख़िरकार वह उसे पा लेता है, तो वह भेड़ को डाँटता नहीं और न घसीटकर घर लाता है। वह आनन्द से उसे अपने कंधों पर उठा लेता है और उसे ले चलता है। फिर वह एक

जश्न रचता है और अपने मित्रों से कहता है, "मेरे साथ आनन्द करो, क्योंकि मेरी खोई हुई भेड़ मुझे मिल गई है!"

यीशु ने समझाया: परमेश्वर ऐसा ही है। "एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में स्वर्ग में इतना आनन्द होगा।" (*मन फिराना* का अर्थ है पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर लौट आना।)

यह कहानी हमें परमेश्वर के विषय में तीन बातें बताती है।

हर एक जन उसके लिये महत्व रखता है। सौ में से एक शायद छोटी बात लगे। पर चरवाहे के लिये वह एक भेड़ ढूँढ़ने के योग्य थी। परमेश्वर के लिये तुम केवल कोई गिनती नहीं हो।

परमेश्वर हमें ढूँढ़ने आता है। भेड़ ने आप घर का रास्ता नहीं ढूँढ़ा। चरवाहा उसके पीछे गया। यही यीशु ने किया, जब वह पृथ्वी पर आया। वह खोए हुओं को ढूँढ़ने आया।

जब हम लौटते हैं, तो परमेश्वर प्रसन्न होता है, नाराज़ नहीं। कुछ लोग सोचते हैं कि परमेश्वर उनसे क्रोधित और निराश है। पर जब कोई उसकी ओर मुड़ता है, तो स्वर्ग में जश्न मनता है!

यदि तुमने कभी खुद को खोया हुआ, परमेश्वर से दूर, या जैसे तुम कहीं के नहीं हो, ऐसा महसूस किया हो, तो उस चरवाहे को याद रखना। वह तुम्हें ढूँढ़ रहा है, और जब तक वह तुम्हें उठाकर घर न ले आए, तब तक वह रुकेगा नहीं।

इस पर सोचो: यह जानकर तुम्हें कैसा लगता है कि जब एक भी व्यक्ति परमेश्वर की ओर लौटता है, तो स्वर्ग में आनन्द मनाया जाता है?

यह करके देखो: क्या कोई ऐसा है जो "खोया हुआ" जान पड़ता है, शायद कोई बच्चा जो अकेला छूट जाता है या जो यीशु को नहीं जानता? आज उसके लिये उसका नाम लेकर प्रार्थना करो, और उसके साथ भलाई करने का कोई उपाय ढूँढ़ो।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि तू वह अच्छा चरवाहा है, जो खोई हुई भेड़ों को ढूँढ़ने जाता है। धन्यवाद कि तूने मुझे पा लिया। जैसे तू खोए हुए लोगों की परवाह करता है, वैसे ही मेरी सहायता कर कि मैं भी करूँ। धन्यवाद कि जब कोई तेरे पास घर लौटता है, तो स्वर्ग आनन्द मनाता है। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 23 — भाग गया बेटा

"तब वह उठकर अपने पिता के पास चला। परन्तु वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देख लिया, और तरस से भर गया, और दौड़कर अपने पुत्र को गले लगाया, और चूमा।"
— लूका 15:20 (BSB)

खोई हुई भेड़ की कहानी के कुछ ही समय बाद यीशु ने एक और कहानी सुनाई, एक पिता और उसके दो बेटों के विषय में।

छोटा बेटा घर में रहते-रहते ऊब गया था। उसने अपने पिता के पास जाकर कहा, "मुझे सम्पत्ति में से मेरा हिस्सा दे दीजिए।" दूसरे शब्दों में, *आपके धन में से मेरा भाग मुझे अभी चाहिए। मैं आपकी मृत्यु तक रुकना नहीं चाहता।* यह कहना बहुत ही अशिष्ट और दुख देनेवाली बात थी।

फिर भी पिता ने उसे धन दे दिया। बेटे ने अपना सामान बाँधा, एक दूर देश चला गया और अपना एक-एक पैसा "बुरे चालचलन" में उड़ा दिया। दावतें, मौज-मस्ती, जो कुछ उसका मन चाहा।

फिर धन ख़त्म हो गया। उसी समय उस देश में अकाल पड़ा, और भोजन दुर्लभ हो गया। बेटा इतना बेबस हो गया कि उसने सूअर चराने की नौकरी कर ली, और वह इतना भूखा था कि सूअरों का चारा भी उसे अच्छा लगने लगा।

आख़िरकार वह "अपने आपे में आया।" उसने सोचा, *मेरे पिता के नौकरों के पास भरपूर भोजन है, और यहाँ मैं भूखा मर रहा हूँ! मैं घर लौट जाऊँगा और कहूँगा, "पिता जी, मैं ने पाप किया है। मैं इस योग्य नहीं कि आपका पुत्र कहलाऊँ। मुझे बस अपने एक नौकर के समान रख लीजिए।"*

इसलिए वह घर की ओर लम्बे रास्ते पर चल पड़ा। और यहीं इस कहानी का सबसे अद्भुत भाग है। "वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देख लिया।" पिता दिन-प्रतिदिन उस

रास्ते पर टकटकी लगाए रहा होगा, इस आशा में कि उसका बेटा घर लौट आए।

और जब उसने उसे देखा, तो पिता **दौड़ा**। उन दिनों में बड़ी उम्र के पुरुष दौड़ते नहीं थे। यह शोभा नहीं देता था। पर इस पिता ने इसकी परवाह नहीं की। इससे पहले कि बेटा अपनी बात पूरी कर पाता, पिता उसके पास दौड़ा, उसे गले लगाया और चूमा।

फिर पिता ने एक जश्न रचाया! उसने अपने बेटे को सबसे अच्छा वस्त्र, एक अँगूठी और नई जूतियाँ दीं। "मेरा यह बेटा मर गया था और फिर जी गया है! वह खो गया था और अब मिल गया है!"

यीशु हमें बता रहे थे कि परमेश्वर कैसा है। तुम चाहे कितनी ही दूर भटक गए हो, चाहे तुमने कुछ भी किया हो, परमेश्वर तुम्हारे लिये उस रास्ते पर टकटकी लगाए रहता है। जब तुम उसकी ओर लौटते हो, तो वह तुमसे अपनी वापसी कमवाता नहीं। वह तुमसे मिलने दौड़ता है।

इस पर सोचो: बेटा तो नौकर के समान बरताव किए जाने की आशा में था, पर पिता ने उसे पुत्र के रूप में अपनाया। यह तुम्हें परमेश्वर के विषय में क्या बताता है?

यह करके देखो: यदि तुमने कुछ ऐसा किया है, जिसे तुम परमेश्वर से छिपाते आए हो, तो आज उसे उसके विषय में बता दो। वह तुमसे मिलने दौड़ रहा है।

प्रिय पिता, धन्यवाद कि तू यीशु की कहानी के उस पिता के समान है। धन्यवाद कि मैं चाहे कितनी ही दूर भटक जाऊँ, तू मेरी बाट जोहता है और मुझे घर में स्वागत करने दौड़ता है। जब-जब मैं ने अपनी मनमानी की, उसके लिये मुझे खेद है। धन्यवाद कि तू मुझसे प्रेम करता है। यीशु के नाम में, आमीन।

दिन 24 — भला सामरी

"'इन तीनों में से कौन उस मनुष्य का पड़ोसी ठहरा, जो डाकुओं के हाथ में पड़ गया था?' व्यवस्था के जानकार ने उत्तर दिया, 'वही, जिसने उस पर दया की।' तब यीशु ने उससे कहा, 'जा, तू भी वैसा ही कर।'"

— लूका 10:36–37 (BSB)

परमेश्वर की व्यवस्था का एक जानकार यीशु को परखने आया। वह परमेश्वर की आज्ञा जानता था: "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।" पर वह कोई बचने का रास्ता ढूँढ़ना चाहता था। इसलिए उसने पूछा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?" शायद उसे आशा थी कि यीशु उसे एक छोटी-सी सूची दे देंगे, ताकि उसे सब से प्रेम न करना पड़े।

इसलिए यीशु ने एक कहानी सुनाई।

एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो की ओर के सुनसान रास्ते पर जा रहा था। डाकुओं ने उस पर हमला किया, उसका सब कुछ छीन लिया, उसे मार-पीटकर अधमरा करके रास्ते के किनारे छोड़ गए।

थोड़ी देर में एक **याजक** उसी रास्ते से आया। वह तो अवश्य सहायता करेगा! पर जब उसने घायल मनुष्य को देखा, तो वह रास्ते की दूसरी ओर से कतराकर आगे बढ़ गया। फिर एक **लेवीय**, जो परमेश्वर के मन्दिर में सहायता किया करता था, वहाँ से आया। उसने देखा, और वह भी दूसरी ओर से होकर आगे निकल गया।

फिर एक **सामरी** वहाँ आया। याद रखो, यहूदी और सामरी आपस में बिलकुल नहीं मिलते-जुलते थे। यीशु की बात सुननेवाले लोग तो यही आशा करते कि इस कहानी में सामरी ही बुरा आदमी होगा!

पर जब सामरी ने उस मनुष्य को देखा, तो "उसे तरस आया।" वह घुटनों के बल बैठ गया, उसके घावों को धोकर बाँधा, उसे अपने ही गदहे पर बैठाकर एक सराय में ले गया।

उसने सारी रात उसकी देखभाल की। अगले दिन उसने सराय के मालिक को पैसे देकर कहा, "इसकी देखभाल करना। यदि और अधिक ख़र्च हो जाए, तो लौटने पर मैं तुझे चुका दूँगा।"

फिर यीशु ने पूछा, "इन तीनों में से कौन उस घायल मनुष्य का पड़ोसी ठहरा?" उस जानकार को उत्तर देना पड़ा, "वही, जिसने उस पर दया की।" और यीशु ने कहा, "जा, तू भी वैसा ही कर।"

देखते हो यीशु ने क्या किया? उस मनुष्य ने पूछा था, "मुझे किससे प्रेम करना है?" यीशु ने प्रश्न को उलट दिया: "किसे इसकी आवश्यकता है कि *तू* उसका पड़ोसी बने?" तुम्हारा पड़ोसी केवल वही नहीं, जो तुम्हारे पास रहता है या जो तुम्हें अच्छा लगता है। वह हर वह जन है, जिसे सहायता चाहिए, चाहे वह तुमसे भिन्न हो, चाहे वह कोई हो जिससे तुम्हारी नहीं बनती।

पड़ोसी बनने में कुछ न कुछ लगता है। सामरी ने अपना समय, अपना धन और अपना आराम दे दिया। पर प्रेम यही करता है।

इस पर सोचो: तुम्हारे जीवन में ऐसा कौन है, जिसे इसकी आवश्यकता है कि तुम उसके लिये "भले सामरी" बनो?

यह करके देखो: आज किसी ऐसे को ढूँढ़ो, जिसे सहायता चाहिए, और दूसरी ओर से कतराकर आगे मत बढ़ जाओ। रुककर सहायता करो।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि तूने मुझे दिखाया कि भला पड़ोसी होने का क्या अर्थ है। मेरी सहायता कर कि मैं सहायता के भूखे लोगों के पास से बचकर न निकल जाऊँ। मुझे तरस से भरा हृदय दे, उनके लिये भी जो मुझसे भिन्न हैं। मेरी सहायता कर कि मैं भी जाकर वैसा ही करूँ। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 25 — जक्कई पेड़ पर चढ़ता है

"जब यीशु उस स्थान पर पहुँचा, तो उसने ऊपर दृष्टि करके कहा, 'जक्कई, झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।'"

— लूका 19:5 (BSB)

"क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

— लूका 19:10 (BSB)

जक्कई यरीहो नगर का एक मुख्य **चुंगी लेनेवाला** था। वह रोमियों के लिये काम करता था, उन विदेशी शासकों के लिये, जिनसे यहूदी लोग बैर रखते थे। और बहुत-से चुंगी लेनेवालों के समान, वह भी लोगों को ठगता था, अधिक वसूलता और वह धन अपने ही पास रख लेता था। वह बहुत धनी था, और बहुत ही नापसन्द किया जाता था।

एक दिन यीशु यरीहो से होकर आए। भीड़ सड़कों के दोनों ओर खड़ी थी। जक्कई यीशु को देखना चाहता था, पर एक कठिनाई थी: वह नाटा था, और नगर के ठग को कोई आगे तो घुसने नहीं देता।

इसलिए जक्कई ने वह किया, जो किसी धनी मनुष्य के लिये शोभा नहीं देता। वह आगे दौड़कर एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया!

जब यीशु उस स्थान पर पहुँचे, तो वे रुके और ऊपर दृष्टि की। उस पूरी भीड़ में से यीशु ने उसी से बात की। "जक्कई, झट उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में रहना अवश्य है।"

यीशु उसका नाम जानते थे! और नगर के सब लोगों में से यीशु ने सबसे नापसन्द किए जानेवाले मनुष्य के घर जाने को चुना।

भीड़ कुड़कुड़ाने लगी: "वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ अतिथि होने चला गया!" पर जक्कई झट उतर आया और आनन्द से यीशु का स्वागत किया।

उस दिन जक्कई के साथ कुछ हुआ। यीशु के संग रहने से वह बदल गया। वह उठ खड़ा हुआ और बोला, "हे प्रभु, देख, मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि मैं ने

किसी को ठगकर कुछ लिया हो, तो उसे चौगुना लौटा देता हूँ।" यह करने को उससे किसी ने नहीं कहा था। जब यीशु उसके हृदय में आए, तो उसका लोभी हृदय एक उदार हृदय बन गया।

यीशु ने कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है।" फिर उन्होंने बताया कि वे पृथ्वी पर क्यों आए: "क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।"

यीशु के आने का यही पूरा कारण है। उन लोगों के लिये नहीं, जो अपने में सब कुछ ठीक-ठाक समझते हैं, पर खोए हुओं के लिये। ठगों और झूठों और उन लोगों के लिये, जिन्हें बाकी सब ने छोड़ दिया है। जक्कई जैसे लोगों के लिये, और तुम्हारे और मेरे जैसे लोगों के लिये।

कोई भी यीशु के लिये इतनी दूर नहीं गया कि लौट न सके। वह तुम्हारा नाम जानते हैं, और वह आज तुम्हारे घर आना चाहते हैं।

इस पर सोचो: जब बाकी सब लोग जक्कई को नापसन्द करते थे, तब यीशु ने उसी के घर जाने को क्यों चुना, ऐसा तुम क्यों सोचते हो?

यह करके देखो: जक्कई ने उन लोगों के साथ बात सुधार ली, जिन्हें उसने चोट पहुँचाई थी। क्या कोई ऐसी बात है, जिसे तुम्हें किसी के साथ सुधारना है? इस सप्ताह उसे कर लो।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि तू खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया। धन्यवाद कि तू मेरा नाम जानता है और मेरे संग रहना चाहता है। जैसे तूने जक्कई का हृदय बदला, वैसे ही मेरा हृदय भी बदल दे। मेरी सहायता कर कि जिन्हें मैं ने चोट पहुँचाई है, उनके साथ बात सुधार लूँ। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 26 — होशाना!

"जो भीड़ आगे-आगे जाती और जो पीछे-पीछे चली आती थी, वे पुकार-पुकारकर कह रहे थे: 'दाऊद की सन्तान को होशाना!' 'धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है!' 'आकाश में होशाना!'"
— मत्ती 21:9 (BSB)

यह फसह के पर्व का सप्ताह था, और यरूशलेम यात्रियों से भरा हुआ था। यीशु और उनके चेले नगर की ओर के रास्ते पर ऊपर चढ़े आ रहे थे।

यीशु ने दो चेलों को पास के एक गाँव में भेजा कि एक गदही और उसके बच्चे को ले आएँ। फिर यीशु उस जवान गदहे पर चढ़कर यरूशलेम में आए।

जैसे ही वे आए, एक बड़ी भीड़ आनन्द से झूम उठी! लोगों ने अपने वस्त्र उनके आगे रास्ते पर बिछा दिए। औरों ने पेड़ों से डालियाँ काटकर वे भी बिछा दीं। यह किसी राजा के लिये लाल कालीन बिछाने जैसा था। और सब पुकार रहे थे: "दाऊद की सन्तान को **होशाना**! धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है! आकाश में होशाना!"

होशाना एक इब्रानी शब्द है, जिसका अर्थ है "हमें बचा!" समय के साथ यह स्तुति की एक पुकार भी बन गया, मानो कोई जयजयकार करे, "उद्धार आ पहुँचा है!" और "दाऊद की सन्तान" उस प्रतिज्ञा किए गए राजा की एक पदवी थी।

लोग ठीक कह रहे थे। यीशु सचमुच राजा *थे*! पर कोई राजा गदहे पर क्यों चढ़ेगा? राजा तो प्रायः बड़े-बड़े युद्ध के घोड़ों पर चढ़ते थे।

सैकड़ों वर्ष पहले जकर्याह भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि राजा "नम्र होकर गदहे पर चढ़ा हुआ" आएगा (मत्ती 21:5)। युद्ध के घोड़े पर चढ़ा राजा लड़ने आता है। गदहे पर चढ़ा राजा शान्ति से आता है। यीशु एक दीन राजा के रूप में आए, सेना लेकर रोम को जीतने नहीं, पर लोगों को पाप से बचाने।

उस भीड़ में से बहुत-से लोग यह नहीं समझे। वे तो ऐसा राजा चाहते थे, जो रोमियों को निकाल बाहर करे और उनका जीवन सहज बना दे। जब यीशु ने वह नहीं किया, जो उन्होंने सोचा था, तो उन्हीं में से कुछ आवाज़ें शीघ्र ही कुछ बहुत भिन्न पुकारने लगेंगी।

आज बहुत-सी कलीसियाएँ इस दिन को **खजूर रविवार** के रूप में स्मरण करती हैं, जो ईस्टर से एक सप्ताह पहले पड़ता है।

तुम्हारे लिये एक प्रश्न है: क्या यीशु तुम्हारे राजा हैं? केवल वह राजा नहीं, जिसकी तुम जयजयकार करते हो जब सब कुछ अच्छा चल रहा हो, पर वह राजा, जिसके पीछे तुम तब भी चलते हो जब वह तुम्हारी सोच से भिन्न काम करता है? सच्चा राजा वह नहीं, जिसे हम बताएँ कि क्या करना है। वह वही है, जिस पर हम भरोसा रखते और जिसकी आज्ञा मानते हैं।

इस पर सोचो: यीशु की जयजयकार करने और राजा के रूप में उनके पीछे चलने में क्या अन्तर है?

यह करके देखो: आज एक प्रार्थना के रूप में "होशाना!" कहो या गाओ: "मुझे बचा, यीशु! तेरी स्तुति हो, यीशु!" फिर आज अपने राजा की आज्ञा मानने का कोई एक उपाय ढूँढ़ो।

होशाना, यीशु! तू वह राजा है, जो शान्ति से गदहे पर चढ़कर आया। तू दाऊद की सन्तान है, वह प्रतिज्ञा किया गया राजा। मैं केवल तेरी जयजयकार नहीं करना चाहता। मैं तेरे पीछे चलना और तेरी आज्ञा मानना चाहता हूँ, तब भी जब मैं समझ न पाऊँ। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 27 — पाँव धोना

"इसलिए जब मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। मैं ने तुम्हें एक आदर्श दिखाया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, वैसा ही तुम भी करो।"
— यूहन्ना 13:14–15 (BSB)

यह यीशु की मृत्यु से एक रात पहले की बात है। वे और उनके चेले फसह का भोजन एक साथ खाने के लिये एक ऊपरी कमरे में इकट्ठे हुए।

उन दिनों में लोग जूतियाँ पहनते थे और धूल भरे, गंदे रास्तों पर चलते थे। जब तुम किसी के घर में आते, तो प्रायः कोई नौकर तुम्हारे पाँव धो देता था। यह घर के सबसे छोटे नौकर का काम होता था। इसे कोई नहीं चाहता था। पाँव गंदे और बदबूदार होते थे!

पर उस रात किसी नौकर ने उनके पाँव नहीं धोए, और किसी चेले ने भी यह करने की पेशकश नहीं की। सच तो यह है कि लूका हमें बताता है कि लगभग इसी समय चेले आपस में इस बात पर झगड़ रहे थे कि उनमें से सबसे बड़ा कौन है (लूका 22:24)।

तब यीशु भोजन से उठे। उन्होंने अपना बाहरी वस्त्र उतारा, कमर में एक अँगोछा बाँधा और एक बर्तन में पानी डाला। और वे एक-एक करके अपने चेलों के पाँव धोने लगे।

वह कमरा तो बिलकुल सन्नाटे में डूब गया होगा। परमेश्वर का पुत्र घुटनों के बल बैठकर मछुओं के गंदे पाँव रगड़-रगड़कर धो रहा था!

जब यीशु पतरस के पास आए, तो पतरस ने कहा, "हे प्रभु, क्या तू मेरे पाँव धोएगा? कभी नहीं!" पर यीशु ने कहा, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो तेरा मुझमें कोई भाग नहीं।" यीशु केवल उनके पाँव ही नहीं धो रहे थे। वे उन्हें उसका एक चित्र दिखा रहे थे, जो वे शीघ्र ही क्रूस पर करने जा रहे थे: उनके पापों को धो डालना।

जब वे कर चुके, तो यीशु फिर बैठ गए और समझाया। "तुम मुझे गुरु और प्रभु कहते हो, और ठीक ही कहते हो। इसलिए जब मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी

एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए।"

यीशु ने बड़प्पन के विषय में संसार की सोच को उलट-पुलट कर दिया। संसार कहता है कि सबसे बड़े लोग वे हैं, जिनकी सेवा की जाती है। यीशु कहते हैं कि सबसे बड़े लोग वे हैं, जो **सेवा करते** हैं।

तुम शायद आज सचमुच किसी के पाँव न धोओ। पर तुम सौ और तरीकों से सेवा कर सकते हो: बिना कहे बर्तन धो देना, किसी संघर्ष करते सहपाठी की सहायता करना, कूड़ा बाहर ले जाना, किसी और को पहले जाने देना। सेवा में कोई ठाठ-बाट नहीं होता। पर यीशु ने यही किया।

इस पर सोचो: घर या स्कूल में कौन-सा ऐसा "गंदा काम" है, जिसे कोई नहीं करना चाहता? क्या तुम यीशु के समान सेवा करने के लिये उसे कर सकते हो?

यह करके देखो: आज अपने परिवार में किसी की ऐसी सेवा करो, जिसकी वह आशा न करता हो, बिना कहे और बिना डींग मारे।

प्रिय यीशु, तू सब कुछ का राजा है, फिर भी तूने घुटनों के बल बैठकर अपने मित्रों के पाँव धोए। धन्यवाद कि तूने मेरे पापों के लिये मरकर मेरी सेवा की। मेरी सहायता कर कि मैं भी वैसे ही औरों की सेवा करूँ जैसे तूने की, तब भी जब वह मज़ेदार न हो और किसी की उस पर नज़र न पड़े। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 28 — "पूरा हुआ"

"जब यीशु ने वह सिरका ले लिया, तब उसने कहा, 'पूरा हुआ।' और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।"

— यूहन्ना 19:30 (BSB)

उस रात भोजन के बाद यीशु प्रार्थना करने एक बारी में गए। वहाँ उन्हीं के एक चेले यहूदा ने उन्हें पकड़वा दिया। सिपाहियों ने यीशु को बन्दी बना लिया। उनके बाकी मित्र भाग गए।

उस रात और अगली सुबह यीशु पर मुकद्दमा चलाया गया, यद्यपि उन्होंने कुछ भी बुरा नहीं किया था। उनका ठट्ठा किया गया, उन्हें पीटा गया और कोड़े लगाए गए। काँटों का एक मुकुट बनाकर उनके सिर पर ठूँस दिया गया। फिर रोमी हाकिम पीलातुस ने उन्हें **क्रूस पर चढ़ाए** जाने के लिये सौंप दिया।

यीशु अपना क्रूस उठाकर यरूशलेम के बाहर गुलगुता नामक एक टीले पर ले गए, जिसका अर्थ है "खोपड़ी का स्थान।" वहाँ सिपाहियों ने उन्हें दो अपराधियों के बीच क्रूस पर कीलों से जड़ दिया। रास्ते से जानेवाले लोग उनका अपमान करते थे। दिन के बीचोंबीच आकाश में अँधेरा छा गया।

क्रूस पर भी यीशु औरों के विषय में सोच रहे थे। जिन लोगों ने उन्हें वहाँ पहुँचाया था, उनके लिये उन्होंने प्रार्थना की: "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं" (लूका 23:34)। उन्होंने यह पक्का किया कि उनकी माता की देखभाल हो। उनके पास के एक अपराधी ने विश्वास के साथ उनकी ओर मुँह किया, तो उन्होंने उससे प्रतिज्ञा की कि वह उनके साथ स्वर्गलोक में होगा।

फिर, बिलकुल अन्त में, यीशु ने ये शब्द कहे: "**पूरा हुआ।**" और उन्होंने प्राण त्याग दिए।

क्या पूरा हुआ? यीशु का जीवन नहीं। यह हार की पुकार नहीं थी। यह विजय की ललकार थी। यीशु ने जो शब्द कहा, उसका अर्थ है *पूरा किया गया* या *सम्पन्न हुआ*। जो काम करने वे आए थे, वह हो चुका था।

याद है, यीशु क्यों आए थे? हमें हमारे पापों से बचाने। हमने अब तक जो भी बुरा किया है, वह दंड के योग्य है, एक ऐसा कर्ज़ जिसे हम कभी नहीं चुका सकते। क्रूस पर यीशु ने वह सब अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने उसे पूरी तरह चुका दिया। जब उन्होंने कहा, "पूरा हुआ," तो उनका अर्थ था कि अब चुकाने को कुछ नहीं बचा। तुम्हारे जोड़ने को कुछ नहीं बचा। तुम्हारे कमाने की कोई आवश्यकता नहीं।

इसी कारण मसीही उस दिन को, जिस दिन यीशु मरे, **गुड फ्राइडे** कहते हैं। यह इतिहास का सबसे दुखभरा दिन था। पर यह सबसे उत्तम दिन भी था, क्योंकि उस दिन यीशु ने हमें बचाने का काम पूरा किया।

एक पल के लिये शान्त होकर सोचो कि यीशु ने तुम्हारे लिये क्या किया।

इस पर सोचो: यीशु ने कहा, "पूरा हुआ।" यह कितना अच्छा समाचार है कि यीशु ने जो किया, उसमें हमारे जोड़ने को कुछ नहीं बचा, ऐसा क्यों है?

यह करके देखो: यूहन्ना 19:16–30 में क्रूस की कहानी पढ़ो। फिर कुछ शान्त पल यीशु ने जो किया, उसके लिये धन्यवाद देने में बिताओ।

प्रिय यीशु, धन्यवाद कि तू मेरे लिये क्रूस पर गया। धन्यवाद कि तूने वह दंड उठा लिया, जिसके योग्य मैं था। धन्यवाद कि तूने मुझे बचाने का काम पूरा किया, और अब चुकाने को कुछ नहीं बचा। मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। मेरी सहायता कर कि मैं हर दिन तेरे किए के लिये धन्यवादी होकर जीऊँ। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 29 — वह जी उठा है!

"परन्तु स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, 'मत डरो, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ़ रही हो, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था। वह यहाँ नहीं है, क्योंकि जैसा उसने कहा था, वैसा ही वह जी उठा है! आओ, वह स्थान देखो, जहाँ वह रखा गया था।'"
— मत्ती 28:5–6 (BSB)

यीशु के मरने के बाद उनके मित्रों ने उनकी देह क्रूस पर से उतारी और उसे चट्टान में खोदी गई एक कब्र में रख दिया। कब्र के मुँह पर एक बहुत बड़ा पत्थर लुढ़का दिया गया। यहाँ तक कि उसकी चौकसी के लिये सिपाही भी भेजे गए, ताकि कोई देह चुरा न ले जाए।

यीशु के अनुयायियों के लिये शनिवार तो उनके जीवन का सबसे अँधेरा, सबसे दुखभरा दिन रहा होगा। उनका मित्र, उनका गुरु, वह जिसे वे राजा मानते थे, मर चुका था। वे डरे हुए और घबराए हुए थे। ऐसा लगता था मानो सब कुछ ख़त्म हो गया।

पर रविवार की सुबह-सुबह, पौ फटते ही, मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम, ये दो स्त्रियाँ कब्र पर गईं।

अचानक एक बड़ा **भूकंप** आया! प्रभु का एक स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरा, उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। वह बिजली के समान चमक रहा था, और उसके वस्त्र हिम के समान उजले थे। पहरेदार इतने भयभीत हुए कि वे काँप उठे और मुर्दों के समान गिर पड़े।

वे स्त्रियाँ भी अवश्य भयभीत रही होंगी। पर स्वर्गदूत ने कहा, "मत डरो, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम यीशु को ढूँढ़ रही हो, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था। **वह यहाँ नहीं है, क्योंकि जैसा उसने कहा था, वैसा ही वह जी उठा है!** आओ, वह स्थान देखो, जहाँ वह रखा गया था।"

कब्र खाली थी!

इन शब्दों पर ध्यान दो, "जैसा उसने कहा था।" यीशु ने अपने चेलों से कई बार कहा था कि वह मरेगा और तीसरे दिन जी उठेगा। वे समझे नहीं थे। पर सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ, जैसा यीशु ने कहा था। यीशु सदा अपना वचन निभाते हैं।

स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा कि झट जाकर चेलों को बताएँ। इसलिए वे "भय और बड़े आनन्द के साथ" दौड़ीं। और रास्ते में स्वयं यीशु उन्हें मिले! वे उनके पाँवों पर गिर पड़ीं और उनकी आराधना की।

यह इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण घटना है। यदि यीशु मरे ही रहते, तो वह बस एक और अच्छे गुरु होते, जो मर गया। पर वह जी उठा! यह प्रमाणित करता है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। यह प्रमाणित करता है कि उसकी मृत्यु ने सचमुच हमारे पापों का दाम चुका दिया। और यह प्रमाणित करता है कि मृत्यु हार गई है। क्योंकि वह जीवित है, इसलिए जो कोई उस पर भरोसा रखता है, वह भी जीएगा।

इसी कारण मसीही **ईस्टर** मनाते हैं। यह अब तक का सबसे अच्छा समाचार है।

इस पर सोचो: स्वर्गदूत ने कहा कि यीशु "जैसा उसने कहा था, वैसा ही" जी उठा। यीशु सदा अपना वचन निभाते हैं, यह क्यों महत्व रखता है?

यह करके देखो: स्त्रियाँ औरों को बताने दौड़ीं। आज किसी से कहो, "यीशु जीवित है!" यदि वे पूछें कि यह क्यों मायने रखता है, तो उन्हें बताओ, जो तुमने आज सीखा।

प्रिय यीशु, तू जीवित है! तू जैसा तूने कहा था, वैसा ही मरे हुओं में से जी उठा। धन्यवाद कि तूने पाप और मृत्यु को हरा दिया। धन्यवाद कि तेरे जीवित होने के कारण मैं तेरे साथ सदा जीवित रह सकता हूँ। कब्र पर की उन स्त्रियों के समान मुझे आनन्द से भर दे, और औरों को बताने में मेरी सहायता कर। तेरे नाम में, आमीन।

दिन 30 — जाओ और सुनाओ

"इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो, और उन्हें वह सब बातें मानना सिखाओ, जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी हैं। और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे साथ हूँ।"
— मत्ती 28:19–20 (BSB)

मरे हुओं में से जी उठने के बाद यीशु चालीस दिन तक अपने चेलों को बार-बार दिखाई दिए। उन्होंने उनके साथ भोजन किया। उन्होंने उनसे बातें कीं। उन्होंने उन्हें अपने हाथों के घावों के निशान दिखाए। इसमें कोई सन्देह न रहा: यीशु जीवित थे!

फिर यीशु गलील के एक पहाड़ पर अपने ग्यारह चेलों से मिले, और उन्हें एक अन्तिम बड़ा काम सौंपा। उन्होंने आरम्भ यह कहकर किया, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" दूसरे शब्दों में, *हर बात पर मेरा ही अधिकार है।* फिर उन्होंने कहा, "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ।"

इसे **महान आज्ञा** कहते हैं। आज्ञा किसी अधिकारी की ओर से सौंपा गया एक महत्वपूर्ण काम होती है। और देखो, यह काम कितना बड़ा है! केवल अपना मुहल्ला नहीं, केवल अपना देश नहीं, पर *सब जातियाँ*।

दिन 9 के उन मछुओं को याद करो? यीशु ने प्रतिज्ञा की थी, "मैं तुम्हें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा।" अब वह समय आ गया था। जो साधारण लोग तीन वर्ष तक यीशु के पीछे चले थे, अब वे जाकर औरों की सहायता करेंगे कि वे भी उनके पीछे चलें।

और यह काम आज भी चलता आ रहा है। दो हज़ार वर्षों से यह यीशु के एक अनुयायी से अगले तक सौंपा जाता रहा है, ठीक तुम तक। किसी ने तुम्हें यीशु के विषय में बताया। अब तुम्हें औरों को बताने का भाग बनने का अवसर मिला है।

भला एक बच्चा महान आज्ञा में कैसे सहायता कर सकता है? तुम संसार भर के उन लोगों के लिये प्रार्थना कर सकते हो, जिन्होंने यीशु के विषय में नहीं सुना। तुम मिशनरियों को दे सकते हो। तुम किसी मित्र को कलीसिया में बुला सकते हो। तुम ऐसे जी सकते हो कि लोगों को यीशु के विषय में जिज्ञासा हो। और तुम अपने मित्रों और परिवार को बता सकते हो कि यीशु तुम्हारे लिये क्या हैं।

यह सुनने में डरावना लग सकता है। पर यीशु की अन्तिम प्रतिज्ञा को मत भूलना: "**देखो, मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ,** जगत के अन्त तक।" तुम इसे कभी अकेले नहीं करते। वही यीशु, जो चरनी में जन्मा, जिसने आँधी को शान्त किया, पाँच हज़ार को भोजन कराया, क्रूस पर मरा और कब्र में से जी उठा, वही हर एक दिन तुम्हारे साथ है।

इस महीने तुम बैतलहम से खाली कब्र तक यीशु के साथ चले हो। अब वह तुमसे वही कहता है, जो उसने बिलकुल आरम्भ में पतरस और अन्द्रियास से कहा था: "मेरे पीछे चले आओ।" और वह जोड़ता है: "जाओ, और औरों को भी अपने साथ ले आओ।"

इस पर सोचो: तुम्हारे जीवन में ऐसा एक व्यक्ति कौन है, जिसे तुम यीशु के पीछे चलते देखना बहुत चाहोगे?

यह करके देखो: एक ऐसे व्यक्ति का नाम लिखो, जिसके लिये तुम हर दिन प्रार्थना करोगे, कि परमेश्वर उसकी सहायता करे कि वह यीशु को जान ले। फिर उसे कलीसिया में बुलाने या उसे यीशु के विषय में बताने का कोई अवसर ढूँढ़ो।

प्रिय यीशु, इन 30 दिनों तक तेरे साथ चलने के लिये धन्यवाद। धन्यवाद कि सारा अधिकार तेरा है और तू सदा मेरे साथ है। मेरी सहायता कर कि मैं तेरी महान आज्ञा का भाग बनूँ। मुझे साहस दे कि मैं औरों को तेरे विषय में बताऊँ, और मेरी सहायता कर कि मैं अपने जीवन के हर दिन तेरे पीछे चलूँ। तेरे नाम में, आमीन।

उपसंहार: चलते रहो

कैसी अद्भुत यात्रा रही! पिछले 30 दिनों में, तुम यीशु के साथ-साथ धरती पर उनके पूरे जीवन से होकर चले हो।

तुमने उन्हें चरनी में जन्म लेते देखा, जहाँ चरवाहे और ज्योतिषी उनसे मिलने आए। तुम उनसे तब मिले जब वे बारह वर्ष के थे और अपने पिता के भवन में प्रश्न पूछ रहे थे। तुमने उन्हें बपतिस्मा लेते देखा और पिता को यह कहते सुना, "यह मेरा प्रिय पुत्र है।" तुमने उन्हें शैतान के सामने दृढ़ता से खड़े होते और साधारण मछुओं को अपने पीछे चलने के लिए बुलाते देखा।

तुमने उन्हें पानी को दाखरस में बदलते, एक ही शब्द से आँधी को शांत करते, एक बालक के भोजन से हज़ारों को खिलाते और पानी पर चलते देखा। तुमने उन्हें एक अंधे भिखारी के लिए रुकते, बच्चों को गले लगाते और एक मरे हुए मनुष्य को उसकी कब्र से बाहर बुलाते देखा। तुमने खोई हुई भेड़, भागे हुए बेटे और एक भले सामरी के विषय में उनकी कहानियाँ सुनीं।

और तुम उनके साथ उनके अंतिम सप्ताह से होकर चले: "होशाना" चिल्लाती भीड़, वह तौलिया और चिलमची, वह क्रूस, और वह खाली कब्र।

इन सब के बाद, एक प्रश्न बाकी सब से अधिक महत्वपूर्ण है। यह वही प्रश्न है जो यीशु ने एक दिन अपने चेलों से पूछा था: "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" (मत्ती 16:15)।

पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" तुम क्या कहोगे?

यदि तुम यीशु के पीछे चलना चाहते हो

यदि तुमने कभी यीशु पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा नहीं किया है, तो तुम आज ऐसा कर सकते हो। यीशु ने तुम्हारे पापों का मोल चुकाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए, और वे

फिर जी उठे। वे तुम्हें क्षमा और नया जीवन एक भेंट के रूप में देते हैं। तुम अपने ही शब्दों में उनसे बात कर सकते हो, या कुछ ऐसी प्रार्थना कर सकते हो:

प्रिय यीशु, मैं विश्वास करता हूँ कि आप परमेश्वर के पुत्र हैं। मैं विश्वास करता हूँ कि आपने मेरे पापों के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए और फिर जी उठे। मैंने जो गलत काम किए हैं, उनके लिए मुझे खेद है। मैं आप पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करना और अपने प्रभु के रूप में आपके पीछे चलना चाहता हूँ। मुझे क्षमा करने और अपना बनाने के लिए धन्यवाद। आमीन।

यदि तुमने ऐसी प्रार्थना की है, तो किसी को बताओ! कोई माता-पिता, कोई पासबान या कोई मसीही मित्र तुम्हारे साथ आनन्द मनाना और तुम्हें बढ़ने में सहायता करना चाहेगा।

आगे क्या

यीशु के पीछे चलना कोई 30-दिन की परियोजना नहीं है। यह पूरे जीवन के लिए है। और जैसे-जैसे तुम उनके पीछे चलते हो, वे तुम्हें भीतर से बाहर तक बदलना आरम्भ कर देते हैं।

पुस्तक 3 में, तुम जानोगे कि यह कैसे होता है। यीशु ने कहा, "मैं दाखलता हूँ और तुम डालियाँ हो" (यूहन्ना 15:5)। जब तुम उनसे जुड़े रहते हो, तो उनका जीवन तुम में बहता है और अच्छा फल उपजाता है: प्रेम, आनन्द, शांति, धीरज, दया और बहुत कुछ। तुम उन शब्दों के विषय में सीखोगे जो तुम कहते हो, उन आदतों के विषय में जो तुम बनाते हो, और उस प्रकार के व्यक्ति के विषय में जो परमेश्वर तुम्हें बना रहा है।

तब तक, यीशु के विषय में पढ़ते रहो। चारों सुसमाचार (मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना) ऐसी कहानियों से भरे हैं जिनके लिए हमारे पास जगह नहीं थी। उनसे बात करते रहो। और एक-एक कदम करके उनके पीछे चलते रहो।

> *"परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही मसीह, परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।"*
> *— यूहन्ना 20:31*

यह AI द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसकी किसी मूल भाषी द्वारा समीक्षा होना अभी बाकी है। यह लेखक का मूल पाठ नहीं है।

© Ochorus. युवा पाठकों के लिए लिखी गई Ochorus की मौलिक कृति। इसे निःशुल्क पढ़ें और साझा करें।

यह अनुवाद Ochorus ने तैयार किया है, जो मसीही क्लासिक पुस्तकों का एक निःशुल्क पुस्तकालय है।

Scripture quotations are from the Indian Revised Version (IRV), © 2017–2019 Bridge Connectivity Solutions, licensed under CC BY-SA 4.0 (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/).

इसे ऑनलाइन, निःशुल्क पढ़ें: https://ochorus.com/hi/books/rooted-2/

और निःशुल्क क्लासिक पुस्तकें: ochorus.com